रजिस्टर्ड नं०–ए०डी०–4
लाइसेन्स सं०–डब्ल्यू०पी०–41
(लाइसेन्स टू पोस्ट बिदाउट प्रीपेमेन्ट)

सरकारी गज़ट, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित

इलाहाबाद, शनिवार, 20 जनवरी, 2018 ई० (पौष 30, 1939 शक संवत्)

भाग 4

निदेशक, षिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

कार्यालय, सचिव, माध्यमिक षिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

विज्ञप्ति

19 दिसम्बर, 2017 ई0

सं0 परिषद्–9/1045–सर्वसाधारण की जानकारी हेतु विज्ञापित एवं प्रसारित है कि माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 द्वारा दिनांक 01 अप्रैल, 2018 से प्रारम्भ हो रहे शैक्षिक सत्र–2018–19 (परीक्षा वर्ष–2019) के कक्षा 9, 10, 11 एवं 12 से सम्बन्धित विषयों के पाठ्यक्रमों को निम्नवत् निर्धारित किया जाता हैः–

कक्षा–9

हिन्दी

गद्य–

1–रवीन्द्र नाथ टैगोर की कहानी– ''तोता'' को सम्मिलित किया गयाः–

तोता

एक था तोता। वह बड़ा मूर्ख था। गाता तो था, पर शास्त्र नहीं पढ़ता था। उछलता था, फुदकता था, उड़ता था, पर यह नहीं जानता था कि कायदा–कानून किसे कहते हैं।

राजा बोले, "ऐसा तोता किस काम का? इससे लाभ तो कोई नहीं, हानि जरूर है। जंगल के फल खा जाता है, जिससे राजा–मण्डी के फल–बाजार में टोटा पड़ जाता है।"
मंत्री को बुलाकर कहा, "इस तोते को शिक्षा दो!"

(2)

तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला। पण्डितों की बैठक हुई। विषय था, "उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?" बड़ा गहरा विचार हुआ। सिद्धान्त ठहरा : तोता अपना घोंसला साधारण खर–पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया–सा पिंजरा बना दिया जाय। राज–पण्डितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने–अपने घर गये।

(3)

सुनार बुलाया गया। वह सोने का पिंजरा तैयार करने में जुट पड़ा। पिंजरा ऐसा अनोखा बना कि उसे देखने के लिए देश–विदेश के लोग टूट पड़े। कोई कहता, "शिक्षा की तो इति हो गयी।" कोई कहता, "शिक्षा न भी हो तो क्या, पिंजरा तो बना। इस तोते का भी क्या नसीब है।"

सुनार को थैलियाँ भर–भरकर इनाम मिला। वह उसी घड़ी अपने घर की ओर रवाना हो गया। पण्डित जी तोते को विद्या पढ़ाने बैठे। नस लेकर बोले, "यह काम थोड़ी पोथियों का नहीं है।"

राजा के भानजे ने सुना। उन्होंने उसी समय पोथी लिखने वालों को बुलवाया। पोथियों की नकल होने लगी। नकलों के और नकलों की नकलों के पहाड़ लग गये। जिसने, भी देखा, उसने यही कहा कि, "शाबाश! इतनी विद्या के धरने को जगह भी नहीं रहेगी।"

नकलनवीसों को लद्दू बैलों पर लाद–लादकर इनाम दिये गए। वे अपने–अपने घर की ओर दौड़ पड़े। उनकी दुनिया में तंगी का नाम–निशान भी बाकी न रहा।

दामी पिंजरे की देख–रेख में राजा के भानजे बहुत व्यस्त रहने लगे। इतने व्यस्त कि व्यस्तता की कोई सीमा न रही। मरम्मत के काम भी लगे ही रहते। फिर झाड़ू–पोंछ और पालिश की धूम भी मची ही रहती थी। जो ही देखता, यही कहता कि "उन्नति हो रही है।"

इन कामों पर अनेक–अनेक लोग लगाये गये और उनके कामों की देख–रेख करने पर और भी अनेक–अनेक लोग लगे। सब महीने–महीने मोटे–मोटे वेतन ले–लेकर बड़े–बड़े सन्दूक भरने लगे।

वे और उनके चचेरे–ममेरे–मौसेरे भाई–बंद बड़े प्रसन्न हुए और बड़े–बड़े कोठों–बालाखानों में मोटे–मोटे गद्दे बिछाकर बैठ गये।

(4)

संसार में और–और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज–खबर लेने वाला कोई नहीं है।

बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनाई पड़ रही है।?"

भानजे ने कहा, "महाराज, अगर सच–सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइये, पण्डितों को बुलाइये, नकनवीसों को बुलाइये, मरम्मत करने वालों को और मरम्मत की देखभाल करने वालों को बुलाइये। निन्दकों को हलवे–मॉड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसीलिए वे ऐसी ओछी बात करते हैं।"

जवाब सुनकर राजा ने पूरे मामले को भली–भॉति और साफ–साफ तौर से समक्ष लिया। भानजे के गले में तत्काल सोने के हार पहनाये गये।

(5)

राजा का मन हुआ कि एक बार चलकर अपनी आँखों से यह देखें कि शिक्षा कैसे धूमधड़ाके से और कैसी बगटुट तेज़ी के साथ चल रही है। सो, एक दिन वह अपने मुसाहबों, मुँहलगों, मित्रों और मन्त्रियों के साथ आप ही शिक्षा–शाला में आ धमके।

उनके पहुँचते ही ड्योढ़ी के पास शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे, खुरदक, नगाड़े, तुरहियाँ, भेरियाँ, दमामें, काँसे, बाँसुरिया, झाल, करताल, मृदंग, जगझम्प आदि–आदि आप ही आप बज उठे।

पण्डित गले फाड़–फाड़कर और बूटियां फड़का–फड़काकर मन्त्र–पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकलनवीस, देखभाल करने वाले और उन सभी के ममेरे, फुफेरे, चचेरे, मौसेरे भाई जय–जयकार करने लगे।

भानजा बोला, "महाराज, देख रहे हैं न?"

महाराज ने कहा, "आश्चर्य! शब्द तो कोई कम नहीं हो रहा!

भानजा बोला, "शब्द ही क्यों, इसके पीछे अर्थ भी कोई कम नहीं!" राजा प्रसन्न होकर लौट पड़े। ड्योढ़ी को पार करके हाथी पर सवार होने ही वाले थे कि पास के झुरमुट में छिपा बैठा निन्दक बोल उठा, "महाराज आपने तोते को देखा भी है?" राजा चौंके। बोले, "अरे हॉ! यह तो मैं बिलकुल भूल ही गया था! तोते को तो देखा ही नहीं!" लौटकर पण्डित से बोले, "मुझे यह देखना है कि तोते को तुम पढ़ाते किस ढ़ंग से हो।" पढ़ाने का ढ़ंग उन्हें दिखाया गया। देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। पढ़ाने का ढ़ंग तोते की तुलना में इतना बड़ा था कि तोता दिखाई ही नहीं पड़ता था। राजा ने सोचा : अब तोते को देखने की जरूरत ही क्या है? उसे देखे बिना भी काम चल सकता है।! राजा ने इतना तो अच्छी तरह समझ लिया कि बंदोबस्त में कहीं कोई भूल–चूक नहीं है। पिंजरे में दाना–पानी तो नहीं था, थी सिर्फ शिक्षा। यानी ढेर की ढेर पोथियों के ढेर के ढेर पन्ने फाड़–फाड़कर कलम की नोंक से तोते के मुँह में घुसेड़े जाते थे। गाना तो बन्द हो ही गया था, चीखने–चिल्लाने के लिए भी कोई गुंजायश नहीं छोड़ी गयी थी। तोते का मुँह ठसाठस भरकर बिलकुल बन्द हो गया था। देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते।

अब दुबारा जब राजा हाथी पर चढ़ने लगे तो उन्होंने कान–उमेठू सरदार को ताकीद कर दी कि "निन्दक के कान अच्छी तरह उमेठ देना!"

(6)

तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा की प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी–स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर–टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी–किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

कोतवाल गरजा, "यह कैसी बेअदबी है।"

फौरन लुहार हाजिर हुआ। आग, भाथी और हथौड़ा लेकर।

वह धम्माधम्म लोहा–पिटाई हुई कि कुछ न पूछिये! लोहे की सांकल तैयार की गई और तोते के डैने भी काट दिये गये।

राजा के सम्बन्धियों ने हाँड़ी–जैसे मुँह लटका कर और सिर हिलाकर कहा, "इस राज्य के पक्षी सिफ बेवकूफ ही नहीं, नमक–हराम भी है।"

और तब, पण्डितों ने एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में बरछा ले–लेकर वह कांड रचाया, जिसे शिक्षा कहते हैं।

लुहार की लुहसार बेहद फैल गयी और लुहारिन के अंगों पर सोने के गहने शोभने लगे और कोतवाल की चतुराई देखकर राजा ने उसे सिरोपा अदा किया।

(7)

तोता मर गया। कब मरा, इसका निश्चय कोई भी नहीं कर सकता। कमबख्त निन्दक ने अफवाह फैलायी कि "तोता मर गया!"

राजा ने भानजे को बुलवाया और कहा, "भानजे साहब यह कैसी बात सुनी जा रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई है!"

राजा ने पूछा, "अब भी वह उछलता–फुदकता है?"

भानजा बोला, अजी, राम कहिये!"

(8)

"अब भी उड़ता है?"

"ना; कतई नहीं!"

"अब भी गाता है?"

"नहीं तो!"

"दाना न मिलने पर अब भी चिल्लाता है?'

"ना!"

राजा ने कहा, "एक बार तोते को लाना तो सही, देखूँगा जरा!"

तोता लाया गया। साथ में कोतवाल आये, प्यादे आये, घुड़सवार आये।

राजा ने तोते को चुटकी से दबाया। तोते ने न हाँ की, न हूँ की। हाँ, उसके पेट में पोथियों के सूखे पत्ते खड़खड़ाने जरूर लगे।

बाहर नव–बसन्त की दक्षिणी बयार में नव–पल्लवों ने अपने निश्वासों से मुकुलित वन के आकाश को आकुल कर दिया। (गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगौर)

2–"सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम'' नामक पाठ को सम्मिलित किया गयाः–

सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

'यातायात' दो शब्द से मिलकर बना हैय "यात+आयात" जिसका अर्थ है आना–जाना। प्राचीनकाल से ही मानव–सभ्यता की समस्त जीवन–शैली आवागमन पर ही निर्भर है। आधुनिक काल में बढ़ते संसाधन एवं विकास क्षेत्र को देखते हुए देश में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में यातायात से सम्बन्धित महत्वपूर्ण नियम बनाये गये हैं, क्योंकि इससे न केवल यातायात सुगम बनता है बल्कि सड़क दुर्घटना से होने वाले भयावह खतरों से बचा जा सकता है। आम जनता खासतौर से युवा–वर्ग के लोगों में अधिक जागरूकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरूकता इत्यादि आयामों से जोड़ा जाना प्रासंगिक हैय क्योंकि विश्व में सड़क–यातायात में मौतें और जख्मी होना एक साधारण घटना हो गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति वर्ष 10 लाख से अधिक सड़क–हादसों के शिकार व्यक्तियों की मौत हो जाती है।

हादसों से बचने के लिए यातायात के नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में एवं सुचारू रूप से पालन न करने के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष 1,40,000 से अधिक व्यक्ति सड़क–दुर्घटना में मारे जाते हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों का अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व भर के कुल वाहनों में से केवल एक प्रतिशत ही वाहन भारत में है, जबकि विश्व की कुल सड़क–दुर्घटना में से 10: हादसे भारत में होते हैं। "विडम्बना यह है कि कोई नियम तब तक अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता जब तक पालनकर्ता उसे आत्मसात करने की कोशिश न करे''।

सड़क यातायात के नियम विवेकपूर्ण होते हैं, और उनका विवेकपूर्ण पालन करना भी आवश्यक होता है। सड़क पर चलने वालों की सुरक्षा के लिए अनेक कानून एवं नियम बनाए गए हैं, जिसका पालन करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व होता है, जिससे हर कोई सुरक्षित घर पहुँच सके। यदि हम इन नियमों का उल्लंघन करते हैं तो स्वयं के साथ–साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं। यातायात के प्रमुख नियमों को सीखने की सुगमता के अनुसार दो भागों में विभक्त कर सकते हैं– (1) सुरक्षा से सम्बन्धित यातायात के नियम एवं सावधानियाँ; (2) वाहन चलाने के नियम एवं सावधानियाँ।

पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बायीं तरफ रहना चाहिए एवं सड़क पार करते समय दायें–बायें देखने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए। व्यस्त सड़कों पर हमेशा जेब्रा–क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए तथा क्रास करते समय कभी यह न सोचना चाहिए कि वाहन चालक उसे देख रहा है। सड़क की संरचनात्मक ढ़ाँचागत सुविधाओं का पूरा उपयोग हो इसलिए सब–वे (तल मार्ग), फुट ओवर ब्रिज सबका पालन नियमगत करना आवश्यक होता है। शार्टकट या आसान विकल्प खोजना खतरनाक हो सकता है।

पैदल यात्रियों को सड़क पार करते समय मोटर–वाहनों एवं अपने बीच पर्याप्त दूरी रखना चाहिए और पार्क की गई या खड़ी गाड़ियों के बीच से रास्ता नहीं बनाना चाहिए। सड़क के खतरों से अधिकांशतः बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं, जिसमें हमेशा वाहन चालक की गलती नहीं होती है, क्योंकि बच्चों की लापरवाही और जागरूकता की कमी से भी सड़क दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। बच्चे हमेशा बड़ों का अनुसरण करते हैं इसलिए उनके सामने विवशता में भी सड़क के नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और उन्हें "रूके, देखें, सुने, सोचे" का मूल मंत्र बताना व पालन कराना अति आवश्यक होता है।

वाहन चलाते समय यातायात नियम एवं सुरक्षा की जानकारी के साथ–साथ वाहन चलाने की योग्यता, उम्र एवं परिपक्वता की जानकारी भी आवश्यक होती है। सड़कों पर तीव्रता से बढ़ती दुपहिया और चौपहिया वाहनों की भीड़ को व्यवस्थित करने एवं सड़क पर आवश्यक जगहों पर लगे सड़क नियम से (यातायात नियम) सम्बन्धित महत्वपूर्ण संकेतों की जानकारी रखना भी आवश्यक होता है क्योंकि भारत में वर्ष 2011 की अवधि में लगभग 4.9 लाख सड़क दुर्घटनाएँ हुई हैं, जिसमें 142485 लोगों की मृत्यु हुई। वाहन चलाते समय कुछ मानवीय भूले होती है जिससे दुर्घटना हो जाती है, इसलिए ऐसे तथ्यों पर गहन विवेचना की आवश्यकता है। बहुत तेज गति से वाहन चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, चालक की ध्यान भटकाने वाली चीजें, लालबत्ती का उल्लंघन करना, सीट–बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा, लेन ड्राइविंग का पालन न करना और गलत तरीके से ओवरटेकिंग करना आदि कारणों से सड़क–दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए उपरोक्त निर्देशित समस्त बिन्दुओं पर ध्यान–केन्द्रित करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। वर्तमान में वाहन चलाते समय मोबाइल फोन के बढते प्रयोग के कारण दुर्घटनाएँ बढ़ी है। सुरक्षा की दृष्टि से वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सभी को पीछे छोड़ने की प्रवृत्ति प्रायः हर किसी में होती हैं, गति में तीव्रता दुर्घटना का जोखिम और दुर्घटना के दौरान चोट की गम्भीरता बढ़ाती है। खुशी के मौके या शौक के कारण लोगों में नशे की प्रवृत्ति होती है; परन्तु नशे की हालत में गाड़ी चलाना, दुर्घटना में वृद्धि करता है। कभी–कभी गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन, होर्डिंग पर ध्यान चले जाना जैसी क्रियाएँ मस्तिष्क–संकेन्द्रक को प्रभावित करता है, इसलिए गाड़ी चलाते समय ऐसी वस्तुओं से दूरी बना लेनी चाहिए। कुछ अन्य बातें भी इसमें शामिल होती है, जैसे गाड़ी का शीशा समायोजित करना, वाहन में स्टीरियो एवं रेडियों का चलाना, सड़क पर जानवरों का आ जाना, विज्ञापन या सूचना पट्ट आदि चीजों से चालक को अपना ध्यान नहीं भंग करना चाहिए और मार्ग–परिवर्तन एवं ध्यान हटाने वाली बाहरी चीजे देखने के दौरान सुरक्षित रहने के लिए वाहन गति धीमी रखने की आवश्यकता होती है।

वाहन चलाते समय चौराहों पर लगी बत्तियों एवं चौराहों पर किस.किस नियम की आवश्यकता होती है उस पर चर्चा जरूरी है। लाल बत्ती संकेत देती है कि वाहन को रूकना है; पीली बत्ती का संकेत

है कि चलने के लिए तैयार होना एवं अन्त में हरी बत्ती का संकेत होता है अब आगे बढ़ना या चलना है। इसके साथ ही चौराहे पर बायें मुड़ना (लेफ्ट टर्न) हमेशा खुला रहने का मतलब है कि बायीं तरफ मुड़ने के लिए या जाने के लिए रूकने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु ध्यान रखना होता है कि चौराहे पर हमारी दाहिनी तरफ से आने वाले वाहन से भी हमें बायीं तरफ रहना है और जब तक पर्याप्त जगह न मिले हमें दाहिनी लेन में नहीं आना चाहिए। परिवहन विभाग से जारी किए गये सड़क से सम्बन्धित कई महत्त्वपूर्ण संकेत निर्धारित किए गये हैं, जिसकी जानकारी रखने एवं पालन करने से यातायात को सुगम, सहज एवं सुखद बनाया जा सकता है। सामान्य रूप से उसे दो भागों में बाँटा गया है, ''लिखित संकेत एवं चित्र संकेत''। लिखित संकेतों में शब्दों, अंकों तथा वाक्यों का प्रयोग करके आवश्यक बातें बतायी जाती हैं। लिखित संकेतों का इतिहास बहुत पुराना है पर इनकी संख्या बहुत कम है। 'मील के पत्थर' 'होर्डिंग द्वारा दिशा–निर्देश', 'गंतव्य स्थानों का ज्ञान कराना' तथा सड़क–यातायात से सम्बन्धित अचानक कोई परिवर्तन' आदि की जानकारी देने के लिए लिखित संकेतों का प्रयोग करते हैं कभी–कभी कुछ मार्गों पर यातायात संकेत के साथ 'मोड़', 'तीव्र–मोड़', 'सड़क की मरम्मत हो रही है', कृपया धीरे चलें, सावधान बच्चे हैं" जैसे लिखित संकेतों के माध्यम से भी सावधानी बरतने के लिए आगाह किया जाता है। प्रयोजन के आधार पर चित्र संकेतों को तीन श्रेणी में प्रदर्शित करते हैं–

(क) खतरे की चेतावनी देने वाले संकेत,
(ख) विनियामक संकेत तथा
(ग) सूचनात्मक संकेत।

चित्र संकेतों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्हें आसानी से देखा, समझा, और पालन किया जा सकता है, प्रत्येक वाहन चालक को निर्देशित चिह्न को समझकर ही वाहन चलाना चाहिए। परिवहन विभाग द्वारा उक्त चिह्नों का सही ज्ञान कराकर ही वाहन–चालक को वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग–लाइसेंस (चालन अनुमति पत्र) दिया जाता है। परन्तु उसका उचित पालन ही यातायात को सुगम एवं सुखदायी बनाता है। चित्र संकेतों के आकार और रंग अलग–अलग होते हैं। लाल रंग के "गोलाकार संकेत" आदेशात्मक होते हैं; लाल रंग के "त्रिकोणीय संकेत" चेतावनी देने वाले होते हैं और नीले रंग के "आयाताकार संकेत" सूचना प्रदायक होते हैं।

यातायात के संकेत "भारतीय रोड–कांग्रेस" (आई0आर0सी0) द्वारा जारी किये जाते हैं तथा संकेत चिन्हों और नियमों का प्रयोग कर बनाये जाते हैं, जिसका अनुपालन देश के सभी नागरिकों से करने की अपेक्षा की जाती है।

यातायात के नियमों का पालन करने में कभी–कभी अन्य गतिरोध उत्पन्न हो जाते हैं क्योंकि अधिकांशतः लोग नियमों की अनदेखी करके अतिशीघ्रता करने की कोशिश करते हैं, जिसके कारण सड़कों पर जाम की स्थिति बन जाती है एवं यातायात बाधित होने लगता है। ऐसी परिस्थिति में कभी–कभी विकल्प के अभाव में जनता यातायात के नियमों को तोड़ने के लिए विवश हो जाती है।

परिवहन नियम के अनुसार उक्त समस्याओं से निपटने के लिए विवेकपूर्ण तथ्यों का अनुपालन करना चाहिए जिससे कोई दुर्घटना या परेशानी का सामना न करना पड़े। उल्लिखित परिस्थिति में कभी–कभी सड़क पर झगड़ा (रोड रेज) की सम्भावना बन जाती है जिसको विविध संकेतों से पहचानकर बचा जा सकता है। उदाहरणार्थ–उत्तेजक वाहन चलाना, अचानक तीव्रता लाना और ब्रेक लगाना, सड़कों पर टेढ़ी–मेढ़ी (जिकजैक), ड्राइविंग करना; तीव्र गति में बार–बार लेन बदलनाय अपनी लेन से अचानक दूसरे वाहन के आगे अपना वाहन लाना, जान बूझकर अन्य वाहनों के लिए अवरोध उत्पन्न करना, दूसरे वाहन को पीछे से या बगल से टक्कर मारना; वाहन को दूसरे वाहन के पीछे एकदम से सटाकर चलानाय निरन्तर हार्न बजाना व लाइट फ्लैश करना। वाहन–चालक को समझदारी दिखाते हुए अपने बचाव के लिए ऐसी स्थिति में उलझने से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

यातायात के नियम पालनार्थ भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क–सुरक्षा में सुधार करने के लिए विभिन्न कदम उठाये हैंय जैसे– सड़क फर्नीचर, सड़क चिन्ह, (रोड मार्किंग) उन्नत परिवहन प्रणाली का प्रयोग करते हुए राजमार्ग यातायात प्रबन्धन प्रणाली आरम्भ करना, निर्माण कार्य के दौरान ठेकेदारों में अनुशासन को बनाए रखना, चुनिन्दा क्षेत्रों में सड़क सुरक्षा ऑडिट इत्यादि। असंगठित क्षेत्रों में भारी मोटर वाहनों के लिए 'पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना, 'राज्यों में ड्राइविंग प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना, दृश्य–श्रव्य तथा प्रिण्ट माध्यमों के द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता पर प्रचार अभियान, सड़क सुरक्षा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वैच्छिक संगठनों/व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों का संचालन, वाहनों में सुरक्षा–मानकों को और अधिक सशक्त बनाना, जैसे– 'सीट–बेल्ट', 'पावर–स्टेयरिंग', 'रियर–व्यू–मिरर' इत्यादि। राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा–योजना के अन्तर्गत विभिन्न राज्य

सरकारों और सरकारी संगठनों को क्रेन तथा एम्बुलेन्स उपलब्ध कराना। राष्ट्रीय राजमार्गों को 2–लेन से 4–लेन, 4–लेन से 6–लेन करने का प्रावधान तथा युवा वर्ग में जागरूकता (सड़क–सुरक्षा) का प्रचार करने की प्रक्रिया को भी शामिल करना है।

अन्ततः यातायात के नियमों के बहुआयामी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य बनता है कि वह परिवहन विभाग द्वारा बनाए गये यातायात से सम्बन्धित समस्त सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक संकेतकों एवं नियमों का पालन कर देश की समृद्धि एवं विकास में अहम योगदान देने का प्रयास करें, जिसमें हमारा देश, समाज एवं परिवार सुरक्षित रहकर विकास की पराकाष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहे।

(यह प्रकरण एक पाठ के रूप में कक्षा–9 में जोड़ा जायेगा, पर इससे व्याख्यात्मक, प्रसंग और संदर्भ आधारित प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।)

पद्य

1–संत रैदास जी की रचना– ''प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी'' को सम्मिलित किया गयाः–

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

विषय–संस्कृत

कक्षा–IX

एक प्रश्न–पत्र 70 अंकों का तथा समय 03 घण्टे होगा।

इस विषय में 70 अंकों की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर प्रश्न–पत्र में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी उल्लेख होगा तथा उसके उत्तर के रूप में तीन या चार उत्तर प्रश्न–पत्र में अंकित होंगे। उनमें से एक शुद्ध उत्तर होगा। उसका उल्लेख पुस्तिका में छात्र को अंकित करना होगा तथा उनका अंक विभाजन निम्नवत् होगा–

भारतीय संविधानस्य निर्माता डा0 भीमराव अम्बेडकरः नामक पाठ को निम्नवत जोड़ा गया।

भारतीय संविधानस्य निर्माता डॉ0 भीमराव अम्बेडकरः

डॉ0 भीमराव अम्बेडकरस्य जन्म अप्रैलमासस्य चतुर्दशदिनांके एकनवत्यधिकाष्टादशशततमे खीष्टाब्दे (14 अप्रैल 1891 ई0) वर्षेऽभवत्। अयं बाबासाहेब इति नाम्ना विख्यातो जातः। अयं भारतीयविधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञः समाजसुधारकश्चासीत्। अयं दलितबौद्धान्दोलनम् अप्रेरयत् दलितोत्थानायाभियानमसंचालयत् च। सः स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमविधिमंत्री भारतीयसंविधानस्य प्रमुखवास्तुकारश्चासीत्। अम्बेडकरः विपुलप्रतिभायाः छात्रः आसीत्। सः तु कोलम्बिया विश्वविद्यालयात् लन्दनविश्वविद्यालयात् च अर्थशास्त्रविषये शोधकार्यं (डॉक्टरेट) सम्पादितवान्। स तु विधि – अर्थशास्त्र–राजनीतिविज्ञानस्य शोधकार्ये ख्यातिं लब्धवान्। जीवनस्य प्रारम्भिकोत्थानकाले सः अर्थशास्त्रविषयस्य आचार्यः (प्रोफेसरः) आसीत्। अनन्तरमधिवक्तृकार्यमप्यकरोत्। षट्पंचाशताधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (1956 ई0) सः बौद्धधर्मं स्वीकृतवान्। नवत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1990) खीष्टाब्दे भारतस्य सर्वोच्चनागरिकसम्मानेन भारतरत्नेन अलंकृतोऽयं जातः।

आम्बेडकरमहोदयस्य जन्म भारतस्य मध्यप्रदेशस्य मऊनामके स्थानेऽभवत्। सः तु रामजी मालोजी सकपाल– महोदयस्य एवञ्च भीमाबाई इत्याख्याः चतुर्दशसंख्यकः पुत्रः आसीत् तस्य कुटुम्बः महाराष्ट्रीयः आसीत्। तत् तु इदानीं आंबडवे ग्रामः आधुनिकमहाराष्ट्रस्य रत्नागिरिजनपदे स्थितः अस्ति। सः हिन्दू महारजात्या सम्बन्धितः आसीत्। तस्य जातिं अस्पृश्यं मन्यन्ते तत्कालीनजनाः। अस्मात् कारणात् तेन सह सामाजिक–आर्थिकरूपेण अत्यधिकपंक्तिभेदः प्रचलितः आसीत्। डॉ0 भीमराव अम्बेडकरस्य पूर्वजः बहुकालं

यावत् ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी इत्याख्याः सेनायां कार्यरतः आसीत्। तस्य पिता भारतीयसेनायाः मऊशिविरे (छावनी) सेवायामासीत्। अत्रैव कार्येषु तल्लीनः सः सूबेदारपदवीं प्राप्तवान्। सः महाराष्ट्रीं (मराठी) आंग्लभाषायाञ्च औपचारिकशिक्षायाः उपाधिम् अलभत्। डॉ0 आम्बेडकरः गौतमबुद्धस्य शिक्षायाः प्रभावितःआसीत्। स्वजातेः कारणात् सः अस्मै सामाजिकं प्रतिरोधम् असहत्। रामजी सकपालः विद्यालये स्वपुत्रस्य भीमरावस्य उपनाम सकपालस्य स्थाने आंबडवेकर लेखितवान्। एकः देशस्त ब्राह्मणशिक्षकः कृष्णा महादेव आंबेडकरः तस्मै स्निहयित स्म। सः तस्य नाम्नः अंबाडवेकर परित्यज्य आम्बेडकर उपनाम संयोजितवान्। तस्मात् सः आंबेडकर नाम्ना विख्यातः। आम्बेडकरः अष्टनवत्यधिकाष्टादशशततमे (1898) खीष्टाब्दे पुनर्विवाहोऽयं कृतवान्। गायकवाडशासकः त्रयोदशैकोनिविंशतिशततमे (1913) खीष्टाब्दे संयुक्तराज्य–अमेरिकायाः कोलम्बिया विश्वविद्यालये गत्वाध्ययनाय भीमराव आम्बेडकरस्य चयनमभवत्। एतत् कार्याय सार्द्ध एकादश (11.5) डालर इति प्रतिमासस्य छात्रवृत्तिरपि तस्मै प्रदत्तम्। न्यूयार्कनगरे आगमनस्य पश्चात्

डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः राजनीतिविज्ञानविभागस्य स्नातकाध्ययनक्रमे प्रवेशं प्राप्तम्। षोडशाधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (1916ई0) तस्य शोधायतं पी0एच0डी0 उपाधिना सम्मानितमकरोत्। सः इदं शोधं पुस्तक 'इवोल्युशन ऑफ प्रोविन्शिअल फिनान्स इन ब्रिटिश इण्डिया' एतत् रूपे प्रकाशितं कारितवान्। सः स्व पी0एच0डी0 इत्युपाधिं नीत्वा षोडशाधिकैकोनविंशति शततमे खीष्टाब्दे (1916ई0) डॉ0 आम्बेडकरः लन्दननगरमगच्छत्। यत्र सः ग्रेज् इन एवं लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स इति विषये नियमस्य (कानून) अध्ययनायार्थशास्त्रे च डॉक्टरेट इत्युपाधये स्वनामोल्लेखं कारितवान्। अग्रिमवर्षे छात्रवृत्तिसमाप्तेः कारणात् सः स्वाध्ययनं परित्यज्य भारतं प्रत्यागच्छत्। प्रथमविश्वयुद्धस्य कालोयमासीत्। बड़ौदाराज्यस्य

सेनासचिवरूपे कार्यं कुर्वन् स्वजीवने आकस्मिकमुपस्थितां समस्यां दृष्ट्वा तस्य मनो तत्र नारमत्। स्ववृत्तिकां त्यक्त्वा सः व्यक्तिगतशिक्षक– लेखाकाररूपे कार्यं कर्त्तुमारभत्। सः स्ववैदेशिकमित्रस्य पूर्वराज्यपाल लॉड सिडेनम महोदयस्य कारणात् मुम्बईस्थितः 'सिडेनम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड एकॉनोमिक्स' इति विद्यालये राजनीतिक अर्थव्यवस्थायाः आचार्यरुपे (प्रोफेसर) आजीविकां लब्धवान्। विंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1920) खीष्टाब्दे कोल्हापुरनगरस्य महाराजा स्व– पारसीमित्रसहयेन सः इंग्लैण्डदेशं प्रति गन्तुं समर्थोऽभवत्। त्रयोविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1923) खीष्टाब्दे सः स्वशोधं 'रूप्यकाणां समस्या' (प्रोब्लेम्स ऑफ द रूपी) सम्पूरितवान्। सः लन्दनविश्वविद्यालयात् 'डॉक्टर ऑफसाइन्स' इत्युपाधिमलभत्। यदा सः नियमस्य (कानून) अध्ययनं सम्पूर्य सः 'ब्रिटिशबार' इति संस्थाने बैरिस्टररूपे प्रवेशमलभत्। भारतप्रत्यागमनकाले डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः त्रयोमासपर्यन्तं जर्मनीदेशे स्थितः। तत्र सः अर्थशास्त्रस्याध्ययनं 'बॉन विश्व विद्यालये' कृतवान्। सः जूनमासस्य अष्टमे दिनांके सप्तविंशति–अधिकैकोनविंशति खीष्टाब्दे (8 जून, 1927 ई0) कोलम्बिया विश्वविद्यालयतः पी0एच0डी0 उपाधिमलभत्।

विंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (1920 ई0) मुम्बईनगरात् सः साप्ताहिकमूकनायकपत्रिकां प्रकाशितवान्। सा पत्रिका सत्वरगत्या जनानां मनसि स्थानं स्थापितवान्। अस्याः पत्रिकायाः कार्यं सः रूढ़िवादीहिन्दूनेतृन् जातीयविभेदं दूरीकरणमकरोत्। दलितसमाजस्यैके सम्मेलने अस्य व्याख्यानेन प्रभावितो स्थानीयशासकः शाहूः चतुर्थः अम्बेडकरमहोदयेन सह भुक्तवान्। तस्य भोजनेन रूढ़िवादीसमाजे कोलाहलमजायत्। आम्बेडकरः लब्धप्रतिष्ठः प्राड्विवाको संजातः अनन्तरं सः बहिष्कृतहितकारिणीसभां स्थापयामास, यस्योद्देश्यं दलितवर्गेषु शिक्षायाः प्रचारप्रसारं एवं तेषां कृते सामाजिक–आर्थिक उन्नतये कार्यं प्रधानमासीत्। महानुभावोऽयं अस्पृश्यतां दूरीकरणार्थं व्यापकं आन्दोलनमसञ्चालयत्। तस्योद्देश्यं स्पर्शास्पर्शदूरीकरणं अस्पृश्यानां देवालयं प्रत्यागमनं तेषां पेयजलसमस्यां समाधानमाद्यासीत्। स्वल्पैव दिवसैव सः डॉ0 आम्बेडकरः प्रख्यातदलितनेता अभवत्। सः मुख्यधारायां महत्त्वपूर्णराजनीतिकदलस्य जातेः व्यवस्थायाः उन्मूलनार्थं प्रति कथितोदासीनतायाः कट्वालोचनामकरोत्। अयं ब्रिटिशशासनस्य विफलतयापि असन्तुष्टः आसीत्। सः अस्पृश्य समुदायस्य कृते पृथक् राजनीतिक परिचयस्य विचारधारां स्थापितवान्। येषु कांग्रेसस्य ब्रिटिश शासनस्य च हस्तक्षेपः न स्यात्।

अक्टूबरमासस्य त्रयोदशदिनांके पंचत्रिंशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (13 अक्टूबर 1935 ई0) अयं विधिमहाविद्यालये प्रधानाचार्यपदे नियुक्तवान्। प्रधानाचार्यरूपे अयं वर्षद्वयं कार्यमकरोत्। अस्मिन्नेव वर्षे अस्य भार्या काल कवलिता संजाता। अस्य भार्या तीर्थयात्रायै गन्तुमिच्छति स्म परञ्चायं तां नादिशत्। तस्य चिन्तनमासीत् यत् तत्र गमनं निष्फलं यत्र तस्याः सम्मानं न स्यात्। अक्टूबरमासस्य त्रयोदशदिनांकेऽयं नासिकनामके स्थाने एकस्मिन् सम्मेलने भाषणमध्ये धर्मपरिवर्तनकर्तुं मन चकार। सः हिन्दूधर्मं परित्यक्तुं स्वानुयायीनमप्यप्रेरयत्। षट्त्रिंशताधिकैकोनविंशतशतितमे खष्टाब्दे (1936) अयं 'स्वतन्त्र लेबर पार्टी' इति दलस्य स्नापनामकरोत्। केन्द्रीयविधानसभायाः निर्वाचने सः पंचदशस्थाने विजयं लब्धवान्। सः स्वपुस्तकं 'जातेः विनाशः' अपि अस्मिन्नेव वर्षे प्रकाशितवान् यत् न्यूयार्के लिखिते शोधपत्रस्योपरि आधारितमासीत्। भारतपाकिस्तानविभाजनकाले तस्य कथनमासीत् यत् कनाडानामके देशेऽपि साम्प्रदायिकविचारधारा सततं प्रचलति तदापि तत्र अंग्रेज–फ्रांसीसी सहैव निवसन्ति, अतः अस्मिन् देशे हिन्दू–मुस्लिमजनाः कथं न सहैव स्थातुं शक्नुवन्ति। तस्य चिन्तनमासीत् यत् देशनिर्माणस्य समाधानं अत्यन्तं दुष्करं भविष्यति। विशालजनसंख्यायाः स्थानान्तरणेन सह सीमा–विवादस्यापि समस्या स्थास्यति तस्य कथनं भारतस्य स्वतन्त्रतायाः पश्चात् हिंसा दृष्ट्वा समीचीनमेव प्रतिभाति।

अगस्तमासस्य पंचदशदिनांके सप्तचत्वारिंशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (15 अगस्त् 1947 ई0) भारतस्य स्वतन्त्रतायाः पश्चात् कांग्रेसदलस्य नेतृत्वे गठितस्य सर्वकारस्य अस्तित्वे डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः देशस्य प्रथमो विधिमंत्री संजातः। अगस्त मासस्य एकोनत्रिंशत् दिनांके सप्तचत्वारिंशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (29 अगस्त 1947 ई0) डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः स्वतन्त्रभारतस्य नवीनसंविधानस्य अध्यक्षः नियुक्तोऽभवत्। अयं समाननागरिकसंहितायाः पक्षधरः आसीत्।

पंचाशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (1950 ई0) अयं बौद्धधर्मं प्रत्याकर्षितोऽभूत्। बौद्धधर्मेण प्रभावितोऽयं बौद्धधर्मं स्वीकृतवान्। दिसम्बरमासस्य षट्दिनांके षट्पंचाशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (6 दिसम्बर, 1956 ई0) अस्य मृत्युः अभवत्।

अयं स्वजीवने बहूनि पुस्तकानि अरचयत्।

यथा– हू वर शुद्राज? दं बुद्धा एंड हिज धम्मा,
थाट्स ऑन पाकिस्तान, अनहिलेशन ऑफ कास्ट
द अनटचेबल, फिलोसफी ऑफ हिन्दूइज्म,
सोशल जस्टिस एंड पॉलिटिकल सेफगाड्र्स
फार डिप्रेस्ड क्लासेज,
गांधी एंड गांधीइज्म, इत्यादयः।

———

खण्ड 'क' (गद्य, पद्य तथा आशुपाठ) **35 अंक**

गद्य

1–गद्य का हिन्दी में ससन्दर्भ अनुवाद	2+5त्र7 अंक
2–पाठ सारांश	4 अंक

पद्य

1–पद्यांश की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या	2+5त्र7 अंक
2–सूक्तियों की व्याख्या	1+2त्र3 अंक
3–श्लोक का संस्कृत में अर्थ	5 अंक

आशुपाठ–

1–पात्रों का चरित्र–चित्रण (हिन्दी में)	4 अंक
2–लघु उत्तरीय प्रश्न (संस्कृत में)	5 अंक

खण्ड 'ख' (व्याकरण, अनुवाद, रचना) **35**

अंक

व्याकरण–

1–माहेश्वर सूत्रों के आधार पर स्वर एवं व्यंजन का सामान्य ज्ञान तथा स्वर,एवं व्यंजन का सामान्य परिचय। 3 अंक

2–संधि– 3 अंक

1–स्वर संधि– अकःसवर्णे दीर्घः , आद्गुणः, इकोंयणचि, वृद्धिरेचि, एचोऽयवायावः

2–व्यंजन संधि– स्तोः श्चुना श्चुः, झलां जशोडन्ते, ष्टुनाष्टुः

3–शब्द रूप 3 अंक

पुल्लिङ्ग–राम, हरि, गुरु।

स्त्रीलिङ्ग–रमा, मति, वाच्।

नपुंसकलिङ्ग–सर्व, तद्, युष्मद् अस्मद्।

1 से 10 तक के संख्या शब्दों का ज्ञान।

4–धातुरूप– (लट्, लृट, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारो में)– 3 अंक

1–परस्मैपद–पठ्, गम्, अस्, शक्, प्रच्छ्।

2–आत्मनेपद–लभ्।

3–उभयपद–याच्, ग्रह्, कथ्।

5–समासकृसमास की सामान्य परिभाषा एवं विग्रह सहित उदाहरण– 03 अंक

तत्पुरुष, द्वन्द्व, कर्मधारय।

6–कारक–समस्त कारकों एवं विभक्तियों का सामान्य परिचय। 03 अंक

7–उपसर्ग का सामान्य परिचय। 02 अंक

अनुवाद–

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 06 अंक

रचना–

1–पत्रलेखन। 05 अंक

2–संस्कृत शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग। 04 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें–

निम्नलिखित पाठ्य–पुस्तकों के सम्मुख अंकित पाठ्यवस्तु (माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश का अध्ययन करना होगा)

संस्कृत गद्य भारती–

संस्कृत गद्य साहित्य का विकास

माङ्गलिकम्।

1–अस्माकं राष्ट्रिय प्रतीकानि।

2–आदिकविः बाल्मीकिः

3–बंधुत्वस्य सन्देष्टा रविदासः।

4–आजादः चन्द्रशेखरः।

5–भारतवर्षम्।

6–परमवीरः अब्दुलहमीदः।

7–पुण्यसलिला गङ्गा।

8–पर्यावरण शुद्धिः।

9–अन्तरिक्षं विज्ञानम्।

10–भारतीय संविधानस्य निर्माता डॉ0भीम राव अम्बेडकरः।

संस्कृत पद्य पीयूषम्–

मंगलाचरणम्।

1–रामस्य पितृ भक्ति।

2–सुभाषितानि।

3–अन्योक्ति–मौक्तिकानि।

4–भारतदेशः।

5–नारी–महिमा।

6–कियाकारककुतूहलम्।

7–नीतिनवीनतम्।

8–यक्षयुधिष्ठिरसंलापः।

9–आरोग्यसाधनानि।

परिशिष्ट (टिप्पणी एवं पाठ सारांश)

कथा नाटक कौमुदी–

1गार्गी याज्ञवल्क्य संवादः।

2–वत्सराजनिग्रहः।

3–न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्।

4–शकुन्तलायाः पतिगृहगमनम्।

संस्कृत व्याकरण–

1–क–माहेश्वर सूत्र एवं वर्णों का उच्चारण स्थान, 2 ङ

ख–सन्धि––स्वर, व्यंजन, विसर्ग सन्धियों का परिचय।

2–समास।

तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व।

3–कारक एवं विभक्ति।

4–अनुवाद।

1–सामान्य नियमों सहित अभ्यास।

2–कारक एवं विभक्ति ज्ञान।

3–अनुवाद अभ्यास।

5–अव्यय।

6–उपसर्ग।

7–शब्दरूप ।

संज्ञा, सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों के तीनों लिंगों में रूप।

8–धातुरूप–

परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद में धातुओं के रूप।

9–संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग।

10–संस्कृतवाक्यशुद्धि।

11–संस्कृत में आवेदन–पत्र तथा निमंत्रण–पत्र।

आन्तरिक मूल्यांकन– अंक 30

शैक्षणिक सत्र में प्रत्येक दो माह में– (अन्तिम सप्ताह में)

प्रथम–अगस्त माह में – अंक 10– वाचन (वाद–विवाद, भाषण, विचाराभिव्यक्ति आदि)

द्वितीय–अक्टूबर माह में –अंक 10 – (व्याकरण सम्बन्धी)

तृतीय–दिसम्बर माह में–अंक 10–सृजनात्मक (नाटक, कहानी, अभिव्यक्ति पत्र लेखन, आदि)

अंग्रेजी–कक्षा–9

Prose

.1- Marco Polo by Mir Nijabat Ali के स्थान पर Kabuliwala by R.N.Tagore को सम्मिलित किया गयाः–

Time clauses पर आधारित संवाद 'Resume' के स्थान पर संवाद 'At the saree shop सम्मिलित किया गया–

At the Saree Shop

(Time clauses)

(When, then, before, after, while)

A Lady goes to a saree shop.....

Salesman: Good morning madam!

Lady: Good morning. I want some silk sarees.

Salesman: Sure madam!

(He shows her sarees)

Lady: How beautiful sarees! Can I have a few more pieces of this pattern.

Salesman: Well madam, our new stock is arriving. Then I can give you more like this saree.

Lady: When is it arriving ?

Salesman: In a few days only.

Lady: I want it before 15th of this month.

Salesman: Sure madam. If you want you can call us after two days and we will inform you.

Lady: Ok.

Salesman: Madam, would you like to see cotton sarees also ?

Lady: Yes, why not.

(The salesman orders the assistant to bring cotton sarees)

Salesman: Madam, while the boy comes with the sarees you can have a look at the catalogue.

Lady: Ok.

Kabuliwallah

My five years old daughter Mini cannot live without chattering. I really believe that in all her life she has not wasted a minute in silence. Her mother is often vexed at this, and would stop her prattle, but I would not. To see Mini quiet is unnatural, and I cannot bear it long. So my own talk with her is always lively.

One morning, for instance, when I was in the midst of the seventeenth chapter of my new novel, my little Mini stole into the room, and putting her hand into mine, said, "Father! Ramdayal, the doorkeeper, calls a crow a krow! He doesn't know anything, does he?"

Before I could explain to her the differences of language in this world, she was embarked on the full tide of another subject."What do you think, Father? Bhola says there is an elephant in the clouds, blowing water out of his trunk, and that is why it rains!"

And then, darting off anew, while I sat still making ready some reply to this last saying, "Father! what relation is Mother to you?"

"My dear little sister in law!" I murmured involuntarily to myself, but with a grave face contrived to answer, "Go and play with Bhola, Mini! I am busy!"

The window of my room overlooks the road. The child had seated hereself at my feet near my table, and was playing softly, drumming on her knees. I was hard at work on my seventeenth chapter, where Protap Singh, the hero, had just caught Kanchanlata, the heroine, in his arms, and was about to escape with ther by the third storey window of the castle, when all of a sudden Mini left her play, and ran to the window, crying, "A Kabuliwallah! a Kabuliwallah!" Sure enough in the street below was a Kabuliwallah, passing slowly along. He wore the loose soiled clothing of his people, with a tall turban; there was a bag on his back, and he carried boxes of grapes in his hand.

I cannot tell what were my daughter's feelings at the sight of this man, but she began to call him loudly. "Ah!" I thought, "he will come in, and my seventeenth chapter will never be finished!" At which exact moment the Kabuliwallah turned, and looked up at the child. When she saw this, overcome by terror, she fled to her mother's protection, and disappeared. She had a blind belief that inside the bag, which the big man carried, there were perhaps two or three other children like herself. The pedlar meanwhile entered my doorway, and greeted me with a smiling face.

So precarious was the position of my hero and my heroine, that my first impulse was to stop and buy something, since the man had been called. I made some small purchases, and a conversation began about Abdurrahman, the Russians, the English, and the Frontier Policy.

As he was about to leave, he asked, "And where is the little girl, Sir?"

And I, thinkng that Mini must get rid of her false fear, had her brought out.

She stood by my chair, and looked at the Kabuliwallah and his bag. He offered her nuts and raisins, but she would not be tempted, and only clung the closer to me, with all her doubts increased.

This was their first meeting.

One morning, however, not many days later, as I was leaving the house, I was startled to find Mini, seated on a bench near the door, laughing and talking, with the great Kabuliwallh at her feet. In all her life, it appeared; my small daughter had never found so patient a listener, save her father. And already the corner of her little sari was stuffed with almonds and raisins, the gift of her visitor, "Why did you give her those?", I

said, and taking out an eitht-anna bit, I handed it to him. The Man accepted the money without demur, and slipped it into his pocket.

Alas, on my return an hour later, I found the unfortunate coin had made twice its own worth of trouble! For the Kabuliwallah had given it to Mini, and her mother catching sight of the bright round object, had pounced on the child with, "Where did you get that eight-anna bit?"

"The Kabuliwallah gave it to me," said Mini cheerfully.

"The Kabuliwallah gave it to me!" cried her mother much shocked. "Oh, Mini! how could you take it from him?"

I, entering at the moment, saved her from impending disaster, and proceeded to make my own inquiries.

It was not the first or second time, I found, that the two had met. The Kabuliwallah had overcome the child's first terror by a judicious bribery of nuts and almonds, and the two were now great friends.

They had many quaint jokes, which afforded them much amusement. Seated in front of him, looking down on his gigantic frame in all her tiny dignity, Mini could ripple her face with laughter, and begin, "O Kabuliwallah, Kabuliwallah, what have you got in your bag?"

And he would reply, in the nasal accents of the mountaineer, "An elephant!" Not much cause for merriment, perhaps; but how they both enjoyed the witticism! And for me, this child's talk with a grown-up man had always in it something strangely fascinating.

Then the Kabuliwallah, not to be behindhand, would take his turn, "Well, little one, and when are you going to the father-in-law's house?"

Now most small Bengali maidens have heard long ago about the father-in-law's house; but we, being a little new-fangled, had kept these things from our child, and Mini at this question must have been a trifle bewildered. But she would not show it, and with ready tact replied, "Are you going there?"

Amongst men of the Kabuliwallah's class, however, it is well known that the words father-in-law's house have a double meaning. It is a euphemism for jail, the place where we are well cared for, at no expense to ourselves. In this sense would the sturdy pedlar take my daughter's question. "Ah," he would say, shaking his fist at an invisible policeman, "I will trash my father-in-law!" Hearing this, and picturing the poor discomfited relative, Mini would go off into peals of laughter, in which her formidable friend would join.

These were autumn mornings, the very time of year when kings of old went forth to conquest; and I, never stirring from my little corner in Calcutta, would let my mind wander over the whole world. At the very name of another country, my heart would go out to it, and at the sight of a foreigner in the streets, I would fall to weaving a network of dreams, --the mountains, the glens, and the forests of his distant home, with his cottage in its setting, and the free and independent life of far-away wilds.

Perhaps the scenes of travel conjure themselves up before me, and pass and repass in my imagination all the more vividly, because I lead such a vegetable existence, that a call to travel would fall upon me like a thunderbolt.

In the presence of this Kabuliwallah, I was immediately transported to the foot of arid mountain peaks, with narrow little defiles twisting in and out amongst their towering heights. I could see the string of camels bearing the merchandise, and the company of turbaned merchants, carrying some of their queer old firearms, and some of their spears, journeying downward towards the plains. I could see-but at some such point Mini's mother would intervene, imploring me to "beware of that man."

Mini's mother is unfortunately a very timid lady. Whenever she hears a noise in the street, or sees people coming towards the house, she always jumps to the conclusion that they are either thieves, or drunkards, or snakes, or tigers, or malaria or cockroaches, or caterpillars, or an English sailor. Even after all these years of

experience, she is not able to overcome her terror. So she was full of doubts about the Kabuliwallah, and used to beg me to keep a watchful eye on him.

I tried to laugh her fear gently away, but then she would turn round on me seriously, and ask me solemn questions.

Were children never kidnapped?

Was it, then, not true that there was slavery in Kabul?

Was it so very absurd that this big man should be able to carry off a tiny child?

I urged that, though not impossible, it was highly improbable. But this was not enough, and her dread persisted. As it was indefinite, however, it did not seem right to forbid the man in the house, and the intimacy went on unchecked.

Once a year in the middle of January Rahmat, the Kabuliwallah, was in the habit of returning to his country, and as the time approached he would be very busy, going from house to house collecting his debts. This year, however, he could always find time to come and see Mini. It would have seemed to an outsider that there was some conspiracy between the two, for when he could not come in the morning, he would appear in the evening.

Even to me it was a little startling now and then, in the corner of a dark room, suddenly to surprise this tall, loose-garmented, much be-bagged man; but when Mini would run in smiling, with her, "O! Kabuliwallah! Kabuliwallah!" and the two friends, so far apart in age, would subside into their old laughter and their old jokes, I felt reassured.

One morning, a few days before he had made up his mind to go, I was correcting my proof sheets in my study. It was chilly weather. Through the window the rays of the sun touched my feet, and the slight warmth was very welcome. It was almost eight o'clock, and the early pedestrians were returning home, with their heads covered. All at once, I heard an uproar in the street, and, looking out, saw Rahmat being led away bound between two policemen, and behind them a crowd of curious boys. There were blood-stains on the clothes of the Kabuliwallah, and one of the policemen carried a knife.

Hurrying out, I stopped them, and enquired what it all meant. Partly from one, partly from another, I gathered that a certain neighbour had owed the pedlar something for a Rampuri shawl, but had falsely denied having bought it, and that in the course of the quarrel, Rahmat had struck him. Now in the heat of his excitement, the prisoner began calling his enemy all sorts of names, when suddenly in the verandah of my house appeared my little Mini, with her usual exclamation, "O Kabuliwallah! Kabuliwallah!" Rahmat's face lighted up as he turned to her. He had no bag under his arm today, so she could not discuss the elephant with him. She at once therefore proceeded to the next question, "Are you going to the father-in-law's house?" Rahmat laughed and said, "Just there I am going, little one!" Then seeing that the reply did not amuse the child, he held up his fettered hands. "Ali," he said, "I would have thrashed that old father-in-law, but my hands are bound!"

On a charge of murderous assault, Rahmat was sentenced to some years imprisonment.

Time passed away, and he was not remembered. The accustomed work in the accustomed place was ours, and the thought of the once-free mountaineer spending his years in prison seldom or never occurred to us. Even my light-hearted Mini, I am ashamed to say, forgot her old friend. New companions filled her life. As she grew older, she spent more of her time with girls. So much time indeed did she spend with

them that she came no more, as she used to do, to her father's room. I was scarcely on speaking terms with her.

Years had passed away. It was once more autumn and we had made arrangements for our Mini's marriage. It was to take place during the Puja Holidays. With Durga returning to Kailas, the light of our home also was to depart to her husband's house, and leave her father's in the shadow.

The morning was bright. After the rains, there was a sense of ablution in the air, and the sun-rays looked like pure gold. So bright were they that they gave a beautiful radiance even to the sordid brick walls of our Calcutta lanes. Since early dawn today the wedding-pipes had been sounding, and at each beat my own heart throbbed. The wail of the tune, Bhairavi, seemed to intensify my pain at the approaching separation. My Mini was to be married tonight.

From early morning noise and bustle had pervaded the house. In the courtyard the canopy had to be slung on its bamboo poles; the chandeliers with their tinkling sound must be hung in each room and verandah. There was no end of hurry and excitement. I was sitting in my study, looking through the accounts, when some one entered, saluting respectfully, and stood before me. It was Rahmat the Kabuliwallah. At first I did not recognise him. He had no bag, nor the long hair, nor the same vigour that he used to have. But he smiled, and I knew him again.

"When did you come, Rahmat?" I asked him.

"Last evening," he said, "I was released from jail."

The words struck harsh upon my ears. I had never before talked with one who had wounded his fellow, and my heart shrank within itself, when I realised this, for I felt that the day would have been better-omened had he not turned up.

"There are ceremonies going on," I said, "and I am busy. Could you perhaps come another day?"

At once he turned to go; but as he reached the door he hesitated, and said, "May I not see the little one, sir, for a moment?" It was his belief that Mini was still the same. He had pictured her running to him as she used to, calling "O Kabuliwallah! Kabuliwallah!" He had imagined too that they would laugh and talk together, just as of old. In fact, in memory of former days he had brought, carefully wrapped up in paper, a few almonds and raisins and grapes, obtained somehow from a countryman, for his own little fund was dispersed.

I said again, "There is a ceremony in the house, and you will not be able to see any one today."

The man's face fell. He looked wistfully at me for a moment, said "Good morning," and went out. I felt a little sorry and would have called him back, but I found he was returning of his own accord. He came close up to me holding out his offerings and said, "I brought these few things, sir, for the little one. Will you give them to her?"

I took them and was going to pay him, but he caught my hand and said, "You are very kind, sir! Keep me in your recollection. Do not offer me money! You have a little girl, I too have one like her in my own home. I think of her, and bring fruits to your child, not to make a profit for myself."

Saying this, he put his hand inside his big loose robe, and brought out a small and dirty piece of paper. With great care he unfolded this, and smoothed it out with both hands on my table. It bore the impression of a little hand. Not a photograph. Not a drawing. The impression of an ink-smeared hand laid flat on the paper. This touch of his own little daughter had been always on his heart, as he had come year after year to Calcutta, to sell his wares in the streets.

Tears came to my eyes. I forgot that he was a poor Kabuli fruit-seller, while I was--but no, what was I more than he? He also was a father. That impression of the hand of his little daughter in her distant mountain home reminded me of my own little Mini.

I sent for Mini immediately from the inner apartment. Many difficulties were raised, but I would not listen. Clad in the red silk of her wedding-day, with the sandal paste on her forehead, and adorned as a young bride, Mini came, and stood bashfully before me.

The Kabuliwallah looked a little staggered at the apparition. He could not revive their old friendship. At last he smiled and said, "Little one, are you going to your father-in-law's house?"

But Mini now understood the meaning of the word "father-in-law," and she could not reply to him as of old. She flushed up at the question, and stood before him with her bride-like face turned down.

I remembered the day when the Kabuliwallah and my Mini had first met, and I felt sad. When she had gone, Rahmat heaved a deep sigh, and sat down on the floor. The idea had suddenly come to him that his daughter too must have grown in this long time, and that he would have to make friends with her anew. Assuredly he would not find her, as he used to know her. And besides, what might not have happened to her in these eight years?

The marriage-pipes sounded, and the mild autumn sun streamed round us. But Rahmat sat in the little Calcutta lane, and saw before him the barren mountains of Afghanistan.

I took out a bank-note, and gave it to him, saying, "Go back to your own daughter, Rahmat, in your own country, and may the happiness of your meeting bring good fortune to my child!"

Having made this present, I had to curtail some of the festivities. I could not have the electric lights I had intended, nor the military band, and the ladies of the house were despondent at it. But to me the wedding feast was all the brighter for the thought that in a distant land a long-lost father met again with his only child.

Poetry–

1–Faithful Friends by William Shakespeare के स्थान पर The Seven Ages of Man by William Shakespeare को सम्मिलित किया गया–

All the world's a stage.
And all the men and women merely players;
They have their exits and entrances,
And one man in his time plays many parts,
His acts being seven ages. At first the infant,
Mewling and puking in the nurse's arms;
Then, the whining schoolboy, with his satchel
And shining morning face, creeping like snail
Unwillingly to school. And then the lover,
Sighing like furnace, with a woeful ballad
Made to his mistress' eyebrow. Then a soldier,
Full of strange oaths, and bearded like the pard,
Jealous in honour, sudden, and quick in quarrel,
Seeking the bubble reputation

Even in the cannon's mouth. And then the justice,
In fair round belly, with good capon lined,
With eyes severe, and beard of formal cut,
Full of wise saws, and modern instances;
And so he plays his part. The sixth age shifts
Into the lean and slippered pantaloon,
With spectacles on nose, and pouch on side;
His youthful hose well saved, a world too wide,
For his shrunk shank; and his big manly voice,
Turning again towards childish treble, pipes
And whistles in his sound. Last scene of all,
That ends this strange eventful history,
Is second childishness and mere oblivion.
Sans teeth, sans eyes, sans taste, sans everything.

विषय : विज्ञान

कक्षा–9

इसमें 70 अंक की लिखित परीक्षा एवं 30 अंक का प्रयोगात्मक एवं प्रोजेक्ट कार्य होगा।

क्र0 सं0	इकाई	अंक
1.	द्रव्य–प्रकृति एवं व्यवहार	20
2.	सजीव जगत में संगठन	15
3.	गति, बल तथा कार्य	25
4.	हमारा पर्यावरण	06
5.	खाद्य उत्पादन	04
	योग	70
	प्रयोगात्मक एवं प्रोजेक्ट कार्य	30
	कुल योग	100

इसमें 70 अंकों की लिखित परीक्षा केवल प्रश्नपत्र की होगी तथा 30 अंकों का प्रयोगात्मक एवं प्रोजेक्ट कार्य होगा।

इकाई–1 द्रव्य एवं व्यवहार **20 अंक**

द्रव्य की परिभाषा, ठोस, द्रव तथा गैसीय अवस्था के लक्षण– आकार, आयतन, घनत्व, अवस्था में परिवर्तन–गलनांक (ऊष्मा का अवशोषण) हिमांक, क्वथनांक, वाष्पीकरण, संघनन, ऊर्ध्वपातन, वाष्पन

द्रव्य की प्रकृति–तत्व, यौगिक तथा मिश्रण, समांगी तथा विषमांगी मिश्रण, कोलाइड तथा निलम्बन।

कण प्रकृति, आधारभूत इकाइयाँ–परमाणु एवं अणु, रासायनिक संयोजन के नियम, स्थिर अनुपात का नियम, द्रव्यमान संरक्षण का नियम, परमाणु द्रव्यमान तथा आण्विक द्रव्यमान, मोल संकल्पनाः मोल का कण के द्रव्यमान तथा संख्या से सम्बन्ध।

परमाणु की संरचना–इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन/संयोजकता, सामान्य यौगिकों के रासायनिक सूत्र, समस्थानिक तथा समभारिक।

इकाई–2 सजीव जगत में संगठन **15 अंक**

(प) **कोशिका**—कोशिका जीवन की आधारभूत इकाई, प्रोकैरियोटिक एवं यूकैरियोटिक कोशिका, बहुकोशिकीय जीव, कोशिका कला एवं कोशिका भित्ति, कोशिकांग एवं कोशिकाद्रव्य, क्लोरोप्लास्ट, माइटोकान्ड्रिया, रिक्तिकाएं, एण्डोप्लाज्मिक रैटीक्युलम, गाल्जीकाय, केन्द्रक, क्रोमोसोम्स।

(पप) **ऊतक, अंग, अंगतन्त्र, जीव**—जंतु एवं वनस्पति ऊतक, संरचना और कार्य, (जन्तुओं में चार प्रकार के ऊतक— एपीथीलियम, संयोजी, पेशी एवं तंत्रिका), विभज्योतकी एवं स्थायी ऊतक (वनस्पतियों में)।

(पपप) **जीवों में विविधता**—वनस्पतियों एवं जन्तुओं में विविधता, वर्गीकरण का आधार, श्रेणियों/समूहों की पदानुक्रमित संरचना— वनस्पतियों के प्रमुख समूह— बैक्टीरिया, थैलोफाइटा, ब्रायोफाइटा, टेरिडोफाइटा, जिम्नोस्पर्म एवं एंजियोस्पर्म (प्रमुख विशेषताएं), जन्तुओं के प्रमुख समूह (नानकार्डेटा संघ तक), (कार्डेटा वर्ग तक), प्रमुख विशेषताएँ।

(पअ) **स्वास्थ्य एवं रोग**—स्वास्थ्य तथा इसका खराब होना, संक्रामक एवं असंक्रामक बीमारियाँ, कारण एवं लक्षण, सूक्ष्मजीव द्वारा उत्पन्न रोग (वाइरस, बैक्टीरिया एवं प्रोटोजोएन्स एवं उनकी रोकथाम, उपचार के नियम एवं रोकथाम, पल्सपोलियो कार्यक्रम।

इकाई—3 : गति, बल और कार्य **25 अंक**

गति—दूरी और विस्थापन, वेग; एक सरल रेखा में एकसमान और असमान गति; त्वरण, एकसमान गति एवं एकसमान त्वरित गति के लिए दूरी—समय तथा वेग—समय ग्राफ, ग्राफीय विधि से गति के समीकरण की व्युत्पत्ति, एकसमान वृत्तीय गति की प्रारम्भिक धारणा।

बल एवं न्यूटन का नियम—बल एवं गति, न्यूटन के गति का नियम, क्रिया एवं प्रतिक्रिया बल, वस्तु का जड़त्व, जड़त्व तथा द्रव्यमान, संवेग, बल एवं त्वरण, संवेग संरक्षण की प्रारंभिक धारणा।

गुरूत्वाकर्षण—गुरुत्वाकर्षण, गुरुत्वाकर्षण का सार्वत्रिक नियम, पृथ्वी का गुरुत्वीय बल (गुरुत्व), गुरुत्वीय त्वरण, द्रव्यमान और भार, मुक्त पतन।

प्लवन —प्रणोद तथा दाब, आर्किमीडीज का सिद्धान्त, उत्प्लावनबल, आपेक्षिक घनत्व की प्रारम्भिक धारणा।

कार्य, ऊर्जा एवं सामर्थ्य—बल द्वारा किया गया कार्य, ऊर्जा, सामर्थ्य, गतिज एवं स्थितिज ऊर्जा, ऊर्जा संरक्षण का नियम।

ध्वनि—ध्वनि की प्रकृति और विभिन्न माध्यमों में इसका संचरण, ध्वनि की चाल, मनुष्यों में श्रव्यता का परिसर, पराध्वनि, ध्वनि का परावर्तन, प्रतिध्वनि, सोनार ½;छ।त्), मानव कर्ण की संरचना (केवल श्रवण सम्बन्धी पक्ष)।

इकाई—4 : हमारा पर्यावरण **06 अंक**

प्राकृतिक संसाधन— वायु, जल, मृदा, वायु— श्वसन के लिये, दहन के लिये, तापमान नियंत्रण के लिये, वायु की गति— पवनें एवं भारत में वर्षा लाने में इनकी भूमिका।

वायु, जल एवं मृदा प्रदूषण (सामान्य परिचय) ओजोन पर्त में छिद्र एवं सम्भावित अवक्षय।

जैव रासायनिक चक्र— जल, आक्सीजन, कार्बन एवं नाइट्रोजन।

इकाई—5 : खाद्य उत्पादन **04 अंक**

पादप एवं जन्तु जनन एवं गुणवत्ता संवर्धन हेतु चयन एवं प्रबन्धन, खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग, रोग एवं कीटों से बचाव, आर्गेनिक कृषि।

प्रयोगात्मक

प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्याँकन विद्यालय स्तर पर आंतरिक होगा, प्रयोगात्मक परीक्षा का अंक विभाजन
निम्नवत् हैः–

1–तीन प्रयोग	–	3 × 3	=	09 अंक
2–मौखिक कार्य	–		=	03 अंक
3–सत्रीय कार्य	–		=	03 अंक
		कुल अंक	=	**15 अंक**

प्रयोगात्मक कार्यों की सूची

1. निम्नांकित विलयन तैयार करना–

1 नमक, चीनी तथा फिटकरी का वास्तविक विलयन बनाना।

2 मिट्टी, खड़िया और महीन बालू का जल में निलम्बन तैयार करना।

3 जल में मण्ड और जल में अण्डे की सफेदी की कोलाइड का निम्न के आधार पर अन्तर स्पष्ट करना–

(1) पारदर्शिता (2) छानना (3) स्थायित्व

2. निम्नांकित तैयार करना–

(1) मिश्रण (2) यौगिक

निम्नांकित तथ्यों के आधार पर लौहचूर्ण तथा सल्फर पाउडर के मध्य अन्तर स्पष्ट करना–

(1) दिखावट (समजातीयता तथा विषमजातीयता)

(2) चुम्बक के प्रति व्यवहार

(3) कार्बन डाईसल्फाइड विलायक के प्रति व्यवहार

(4) ऊष्मा का प्रभाव

3. बालू, नमक तथा अमोनियम क्लोराइड मिश्रण के घटकों को अलग करना।

4. निम्नलिखित अभिक्रियाएँ क्रियान्वित करना तथा उन्हें भौतिक और रासायनिक परिवर्तन में वर्गीकृत करना–

1 जल में लौह तथा कापर सल्फेट विलयन

2 मैग्नीशियम छीलन का वायु में दहन

3 जिंक तथा सल्फ्यूरिक अम्ल

4 कापर सल्फेट क्रिस्टल को गर्म करना

5 सोडियम सल्फेट तथा बेरियम क्लोराइड का जल में विलयन

5. प्याज की झिल्ली एवं मानव गाल की कोशिकाओं की अस्थायी अभिरंजित स्लाइड तैयार करना। निरीक्षण तथा रेखांकित चित्र बनाना।

6. पौधों में पेरेन्काइमा, कोलेनकाइमा एवं स्केलेरेन्काइमा ऊतक जंतुओं में अरेखित, रेखित एवं कार्डियक पेशी, तंत्रिका कोशिका की तैयार स्लाइड्स का अध्ययन, पहचान एवं नामांकित चित्रण।

7. बर्फ का गलनांक एवं जल का क्वथनांक ज्ञात करना।

8. ध्वनि के परावर्तन के नियम का सत्यापन करना।

9. कमानीदार तराजू तथा मापक सिलिन्डर का उपयोग करके किसी ठोस (जल से अधिक घनत्व) का घनत्व ज्ञात करना।

10. किसी ठोस को निम्न में विसर्जित करने पर उसके भार में होने वाले हानि के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना–

1 नल का जल

2 खारे पानी में किन्हीं दो विभिन्न ठोसों को डालने पर उनके द्वारा विस्थापित जल का भार

11. खिचे हुए धागे में कंपन संचरण (फैलाव/प्रसार) की गति ज्ञात करना।

12. स्पाइरोगाइरा/एगेरिकस, मॉस/फर्न, पाइनस (नर अथवा मादा कोन के साथ) तथा आवृतबीजी पौधे के गुणों का अध्ययन करना तथा इनके अन्तर्गत आने वाले समूह के किन्हीं दो लक्षणों सहित सचित्र वर्णन करना।

13. दिए गए चित्र/चार्ट/मॉडल की सहायता से केचुआ, तिलचट्टा, अस्थि मत्स्य तथा पक्षी का अवलोकन करना। प्रत्येक जन्तु का चित्र बनाकर अभिलेखित करना–

(1) दिए गए जन्तु के जाति का विशेष लक्षण

(2) वास के संदर्भ में एक अनुकूलित लक्षण

14. रासायनिक क्रिया में द्रव्यमान के संरक्षण के नियम का सत्यापन करना।

15. एक बीजपत्री एवं द्विबीजपत्री पौधों के जड़, तना, पत्ती एवं पुष्प की बाह्य आकारिकी का अध्ययन करना।

टिप्पणी–प्रत्येक विद्यार्थी के पास विज्ञान की एक प्रयोगात्मक नोट बुक होगी जिसमें प्रयोगात्मक कार्य का दैनिक रिकॉर्ड दर्ज किया जायेगा, जिसकी सही ढंग से जाँच होनी चाहिये और इसे प्रयोगात्मक परीक्षा के समय प्रस्तुत किया जाय।

प्रोजेक्ट कार्य की सूची **15 अंक**

नोटः– दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। प्रत्येक खण्डों (भौतिक, रसायन व जीव विज्ञान) में से एक–एक प्रोजेक्ट कार्य व प्रोजेक्ट फाइल तैयार कराना अनिवार्य होगा। शिक्षक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट कार्य अपने स्तर से भी दे सकते हैं। तीनों प्रोजेक्ट का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

1. विभिन्न खेतों की मिट्टियों के नमूने लेकर उसकी अम्लीयता की जाँच करना–

   (परखनली, सार्वत्रिक सूचक, पेपर, कैल्शियम सल्फेट, मिट्टी के नमूने)।

2. दैनिक जीवन में रसायनों का महत्व–

   (रसोई, भोजन, दवा, वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधनों आदि में रसायन की भूमिका)।

3. विभिन्न स्रोतों (कुआँ, नल, तालाब, नदी) से जल के नमूने लेकर उनकी शुद्धता की जाँच करना तथा अशुद्ध पानी को पीने योग्य बनाने का एक प्रोजेक्ट तैयार करना।

4. दूध तथा घी के विभिन्न नमूने लेकर उसमें वनस्पति की मिलावट का पता लगाना–

   (हाइड्रोक्लोरिक अम्ल तथा चीनी द्वारा)।

5. विभिन्न पदार्थों (यूरिया, ग्लूकोस, सुक्रोस व नमक आदि) को घोलने पर पानी के क्वथनाँक पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

6. विभिन्न प्रकार के ऊर्जा रूपान्तरणों को तालिकाबद्ध करके पवन ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलने का सचित्र मॉडल तैयार करना।

7. अपने आस–पास प्रयोग होने वाले आदर्श श्याम पिण्डों को सूचीबद्ध कीजिए तथा दैनिक जीवन में विकिरण ऊर्जा के प्रभाव का सचित्र अध्ययन करना।

8. विभिन्न वाद्ययंत्रों की सूची बनाकर दर्शाइये कि उन वाद्य यंत्रों के कौन से भाग में कम्पन होता है।

9. तरंग मशीन का मॉडल तैयार करके जल की सतह पर उत्पन्न होने वाली तरंग का सचित्र अध्ययन करना।

10. अपने क्षेत्र में पाये जाने वाले पक्षियों की चित्रात्मक सूची तैयार करके इनके आवास एवं वास–स्थान की जानकारी प्राप्त करना।

11. (D.N.A.) (डी ऑक्सी राइबोन्यूक्लिक अम्ल) का मॉडल तैयार करना।

12. स्थानीय जल प्रदूषण के कारणों की जानकारी प्राप्त करना एवं प्रोटोजोएन्स, मछली, एल्गी पर जल प्रदूषण के प्रभाव का अध्ययन।

13. प्याज की झिल्ली की अभिरंजित स्लाइड बनाकर सूक्ष्मदर्शीय प्रेक्षण द्वारा कोशिका की संरचना का अध्ययन।

14. एक चार्ट पेपर पर विभिन्न प्रकार की गति का सचित्र व सोदाहरण अध्ययन करना।

15. वैश्विक–तपन का मानव जीवन पर प्रभाव का सचित्र अध्ययन करना।

16. पर्यावरण प्रदूषण व ओजोन परत अपक्षय में रसायनों की भूमिका।

17. आस–पास के खेतों का भ्रमण करें तथा किसानों से पता लगायें कि वह किस फसल के लिये कौन–कौन से उर्वरक का प्रयोग करते हैं। इन उर्वरकों की पोषक तत्वों की सूची बनाइये।

विषय : सामाजिक विज्ञान

कक्षा–9

इसमें एक लिखित प्रश्नपत्र–70 अंकों एवं 30 अंकों का प्रोजेक्ट कार्य होगा;

इकाई		अंक
ए	भारत और समकालीन विश्व–1 (इतिहास)	20
बी	समकालीन भारत –1 (भूगोल)	20
सी	लोकतांत्रिक राजनीति (नागरिकशास्त्र)	15
डी	अर्थव्यवस्था (अर्थशास्त्र)	15
	योग. .	**70**
	प्रोजेक्ट कार्य	30
	योग. .	**100**

इकाई–1 (इतिहास)

भारत और समकालीन विश्व–1 20

अंक

निर्देश–निम्नांकित 08 इकाईयों में से किन्ही 05 इकाईयों का अध्ययन आवश्यक है। खण्ड 1 से कोई 2, खण्ड–2 से कोई 2 एवं खण्ड 3 से कोई 1 ।

खण्ड–1 **05**

अंक

घटनायें और प्रक्रियायें

(1) फ्रांसीसी क्रान्ति

1. पुरातन शासन व्यवस्था और उसकी समस्यायें (संकट)
2. क्रान्ति के लिये उत्तरदायी सामाजिक तत्त्व।
3. तत्कालीन क्रान्तिकारी समूह और विचार
4. विरासत

(2) यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रान्ति

1. जारवाद (राजत्व) का संकट
2. 1905 से 1917 के मध्य सामाजिक आन्दोलनों की प्रकृति।
3. प्रथम विश्व युद्ध और सोवियत राज्य की स्थापना।
4. विरासत

(3) नाजीवाद और हिटलर का उदय

1. सामाजिक लोकतंत्र का विकास
2. जर्मनी में संकट, हिटलर के उदय का मूल कारण
3. नाजीवाद की विचारधारा
4. नाजीवाद का प्रभाव

खण्ड–2 **05**

अंक

जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

(4) वन्य समाज और उपनिवेशवाद

1. जीविकोपार्जन और जंगल के बीच सम्बन्ध
2. उपनिवेशवाद के अन्तर्गत वन्य समाज (नीतियों) में हुये परिवर्तन,

केस अध्ययन– मुख्यतः दो वन्य आन्दोलनों में प्रथम औपनिवेशिक भारत में (बस्तर) और दूसरा इण्डोनेशिया का। (अध्याय–4)

(5) आधुनिक विश्व में चरवाहे

1. पशुचारण–जीवन निर्वाह के रूप में
2. पशुचारण के विभिन्न प्रकार (स्वरूप)

3. औपनिवेशिक शासन और आधुनिक राज्य में चरवाहों का जीवन

केस अध्ययन– मुख्यतः दो चरवाहा समूह– एक अफ्रीका का और दूसरा भारत का।

(6) किसान और काश्तकार

1. कृषक समाज एवं विभिन्न प्रकार की कृषि विधियों के उदय के कारण।

2. आधुनिक विश्व में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन

केस अध्ययन–मुख्यतः ग्रामीण परिवर्तन में विभिन्न विरोधाभासी प्रवृत्तियों एवं ग्रामीण समाज के विभिन्न रूपों का विस्तार–संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़े पैमाने पर गेहूँ और कपास की खेती एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था और इंग्लैण्ड में कृषि क्रान्ति। उपनिवेशिक भारत में लघु काश्तकारों द्वारा उत्पादन (अध्याय–6)

खण्ड–3 **05 अंक**

संस्कृति, पहचान और समाज

संस्कृतिक मुद्दे किस प्रकार समकालीन **विश्व** के निर्माण से सम्बन्धित है।

(7) खेल एवं राजनीति– क्रिकेट की कहानी

1. इग्लैड में क्रिकेट का खेल के रूप में प्रादुर्भाव

2. क्रिकेट और उपनिवेशवाद–उपनिवेशवाद

3. क्रिकेट, राष्ट्रवाद और विश्व – औपनिवेशीकरण

(8) परिधान और संस्कृति

1. वेशभूषा के परिवर्तन का संक्षिप्त इतिहास

2. औपनिवेशिक भारत में वेशभूषा पर विचार–विमर्श

3. स्वदेशी और खादी आंदोलन

(9) मानचित्र कार्य–

दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों हेतु मानचित्र से संबंधित पांच प्रश्न पूँछे जायेंगे। **05 अंक**

इकाई–2 : समकालीन भारत–1 (भूगोल) **20 अंक**

1. **भारत**–आकार एवं स्थिति 05 अंक

भारत का भौतिक स्वरूप–भू–आकृतियाँ (relief), संरचना, प्रमुख प्राकृतिक भूगोल इकाईयाँ (Physiographic Unit).

2. (1) अपवाह–प्रमुख नदियाँ एवं उसकी सहायक नदियाँ, झीलें अर्थव्यवस्था में नदियों की भूमिका, नदियों का प्रदूषण, नदियों के प्रदूषण को रोकने के उपाय।
05 अंक

(2) जलवायु–जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक, मानसून और इसकी विशेषताएँ, वर्षा का वितरण ऋतुएँ; जलवायु तथा मानव जीवन।

3. (3) प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी–वनस्पति के प्रकार, धरातल एवं जलवायु के अनुसार वनस्पति के प्रकार में विविधता। उनके संरक्षण की आवश्यकता एवं विभिन्न उपाय। मुख्य प्रजातियाँ, उनका वितरण, उनके संरक्षण की आवश्यकता एवं उसके विभिन्न उपाय।
05 अंक

(4) जनसंख्या–आकार, वितरण, आयु–लिंग संघटन, जनसंख्या परिवर्तन, जनसंख्या परिवर्तन के एक घटक के रूप में प्रवास, साक्षरता, स्वास्थ्य, व्यावसायिक संरचना तथा राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, विशेष आवश्यकताओं वाली कुपोषित जनसंख्या के रूप में किशोर।

4. मानचित्र कार्य–

दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों हेतु मानचित्र से संबंधित पाँच प्रश्न पूँछे जायेंगे। **05 अंक**

लोकतांत्रिक राजनीति–1(नागरिकशास्त्र)

इकाई–3 **15 अंक**

1. **(1) समकालीन विश्व में लोकतंत्र–** **05 अंक**

परिचय–लोकतंत्र की दो विशेषताएँ, लोकतंत्र के तीन नक्शे, लोकतंत्र के विस्तार के विभिन्न चरण, उपनिवेशवाद का अंत, विश्व स्तर पर लोकतंत्र, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन।

(2) लोकतंत्र क्या एवं क्यूँ ?–

लोकतंत्र को परिभाषित करने के विभिन्न तरीके क्या हैं? लोकतंत्र शासन का सर्वाधिक प्रचलित स्वरूप क्यों बन चुका है? लोकतंत्र के विकल्प क्या हैं? क्या लोकतंत्र अपने मौजूदा विकल्पों से श्रेष्ठ है? क्या प्रत्येक लोकतंत्र में समान संस्थाएँ और आदर्श होने चाहिए?

2. **(1) संविधान निर्माण –** **05 अंक**

भारत लोकतंत्र बना–क्यूँ और कैसे? भारतीय संविधान कैसे विकसित हुआ है? भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं? भारत में किस प्रकार से लोकतंत्र निरंतर रचित एवं पुनर्रचित हुआ है?

(2) चुनावी राजनीति–

हम प्रतिनिधियों का चुनाव कैसे एवं क्यूँ करते हैं? हमारे यहाँ राजनीतिक दलों में प्रतिद्वंदिता क्यों है? चुनावी राजनीति में नागरिकों की सहभागिता किस प्रकार बदल गई है? स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित कराने के तरीके क्या हैं?

3. **(1) संस्थाओं की कार्यप्रणाली–** **05 अंक**

देश कैसे शासित होता है? हमारे लोकतंत्र में संसद की क्या भूमिका है? भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मन्त्रिपरिषद की क्या भूमिका होती है? ये कैसे एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं?

(2) लोकतांत्रिक अधिकार–

हमें संविधान में अधिकारों की आवश्यकता क्यूँ है? भारतीय संविधान में नागरिकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले मौलिक अधिकार क्या हैं? न्यायपालिका किस प्रकार से नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करती है? न्यायपालिका की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के क्या उपाय

इकाई–4 : अर्थव्यवस्था (अर्थशास्त्र) **15 अंक**

1. **पालमपुर की कहानी**– 02 अंक

पालमपुर में आर्थिक लेन–देन तथा शेष विश्व के साथ पालमपुर की पारस्परिक क्रिया जिनके द्वारा उत्पादन की अवधारणा (भूमि, पूँजी तथा श्रम) को समझाया जा सके।

2. **जनसंख्या संसाधन के रूप में** – 05 अंक

जनसंख्या किस प्रकार संसाधन/सम्पत्ति हो जाती है? पुरूषों एवं स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले आर्थिक क्रियाकलाप; महिलाओं द्वारा किये जाने वाले कार्य जिनका भुगतान नहीं होता; मानव संसाधन की गुणवत्ता; स्वास्थ्य एवं शिक्षा की भूमिका; मानव संसाधन के अनुपयोग के रूप में बेरोजगारी, इसके सामाजिक एवं राजनीतिक निहितार्थ किये जाने वाले सामान्य रूप।

3. **निर्धनता–एक चुनौती**– 03 अंक

गरीब कौन है (एक शहरी, एक ग्रामीण केस अध्ययन द्वारा), संकेतक; पूर्ण निर्धनता– लोग निर्धन क्यों है; संसाधन का असमान वितरण, देशों के मध्य तुलना, गरीबी उन्मूलन के लिये सरकार द्वारा उठाए गए कदम।

4. **भारत में खाद्य सुरक्षा –** 05 अंक

खाद्यान्नों के स्रोत, देश में विविधता, पिछले समय में अकाल, आत्मनिर्भरता की आवश्यकता, खाद्य सुरक्षा में सरकार की भूमिका, खाद्यान्नों की अधिप्राप्ति, छोटे भंडार (ठसाठस भरे भंडार) और भूखे लोग, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, खाद्य सुरक्षा में सहकारी समितियों की भूमिका (खाद्यान्नों, दूध तथा सब्जियों की राशन की दुकानें; सहकारी दुकानें, 2–3 उदाहरण)।

कक्षा–9

सामाजिक विज्ञान के लिये मानचित्र कार्य की सूची

इतिहास–

1 फ्रांसिसी क्रांति–

फ्रांस का रूपरेखीय मानचित्र (चिन्हित तथा पहचानने/नामांकित करने हेतु)

क–बोरडाक्स

ख–नान्तेस

ग–पेरिस

घ–मार्सेल्स

2 यूरोप में समाजवाद तथा रूस की क्रान्ति–

विश्व का रूपरेखीय मानचित्र (चिन्हित, पहचानने/नामांकित करने हेतु)

क–प्रथम विश्व युद्ध के प्रमुख देश (केन्द्रीय शक्तियाँ तथा मित्र शक्तियाँ)

ख–केन्द्रीय शक्तियाँ– जर्मनी, ऑस्ट्रिया–हंगरी, तुर्की (ओटोमन साम्राज्य)

ग–मित्र शक्तियाँ– फ्रांस, इंग्लैंड, (रूस), अमेरिका

3 नाजीवाद तथा हिटलर का उदय–

विश्व का रूपरेखीय मानचित्र (चिन्हित, पहचानने/नामांकित करने हेतु)

क–द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख देश–

धुरी शक्तियाँ – जर्मनी, इटली, जापान

मित्र शक्तियाँ – यूनाईटेड किंगडम, फ्रांस, पूर्व यूनियन सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक, संयुक्त राज्य अमेरिका

ख–जर्मन विस्तार के अन्तर्गत क्षेत्र (नाजी शक्ति)

– ऑस्ट्रिया, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया (मानचित्र में केवल स्लोवाकिया), डेनमार्क, लिथुआनिया, फ्रांस, बेल्जियम।

कक्षा–9

भूगोल

1–भारत–आकार तथा स्थिति

1–भारत– राजधानियों सहित राज्य, कर्क रेखा, मानक भूमध्य, सबसे दक्षिणी, सबसे उत्तरी, सबसे पूर्वी तथा सबसे पश्चिमी बिंदु (चिन्हित तथा नामांकित करना)

2–भारत की प्राकृतिक विशेषताएँ–

पर्वत श्रेणियाँ– काराकोरम, शिवालिक, अरावली, विन्ध्य, सतपुड़ा, पश्चिमी तथा पूर्वी घाट, जांस्कर।

पर्वत चोटियाँ– के–2, कंचनजंघा, अनाईमुडी

पठार– दक्खन का पठार, छोटा नागपुर का पठार, मालवा पठार

तटीय मैदान– कोंकण, मालाबार, कोरोमंडल तथा छवतजीमतद ब्यतबंते (चिन्हित तथा नामांकित करना)

3–अपवाह तंत्र–

नदियाँ (केवल चिन्हित करने हेतु)

क) हिमालयी नदी तंत्र– सिंधु, गंगा तथा सतलज

ख) प्रायद्वीपीय नदियाँ– नर्मदा, तापी, कावेरी, कृष्णा, गोदावरी, महानदी।

झीलें–वुलर, पुलीकट, साम्भर, चिल्का, वेम्बनाद, कोल्लेरू

4–जलवायु–

क) चिन्हित करने हेतु शहर– तिरूवनंतपुरम, चेन्नई, जोधपुर, बैंगलूरू, मुम्बई, कोलकाता, लेह, शिलांग, दिल्ली, नागपुर (चिन्हित तथा नामांकित करना)

ख) 20 से0मी0 से कम तथा 400 सेमी0 से अधिक वर्षा वाले क्षेत्र (केवल चिन्हित करने हेतु)

5–प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य जीवन–

वनस्पति का प्रकार–ऊष्णकटिबंधीय सदाबहार वन, ऊष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन, कंटीले वन, पर्वतीय वन तथा मैंग्रोव (केवल चिन्हित करने हेतु)।

राष्ट्रीय उद्यान–कार्बेट, काजीरंगा, रणथम्भौर, शिवपुरी, कान्हा, सिमलीपाल तथा मानस

पक्षी अभयारण्य– भरतपुर तथा रंगनथिट्टो

वन्यजीव अभयारण्य–सरिस्का, मदुमलाई, राजाजी, दचिगाम (चिन्हित तथा नामांकित करने हेतु)

6–जनसंख्या (चिन्हित तथा नामांकित करना)–

सबसे अधिक और कम जनसंख्या घनत्व वाले राज्य उच्चतम तथा निम्नतम लिंग अनुपात वाले राज्य क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़े और छोटे राज्य।

कक्षा–9

सामाजिक विज्ञान 15 अंक

<u>प्रोजेक्ट कार्य/गतिविधि</u>

- शिक्षार्थी भारत के गीत, नृत्य, पर्व और निश्चित मौसम में प्रमुख प्रकार के भोजन की पहचान, साथ ही क्या एक क्षेत्र की दूसरे क्षेत्र से कुछ समानता है? इसकी पहचान करें। शिक्षार्थी द्वारा अपने विद्यालय क्षेत्र के आस–पास की वनस्पति एवं पशु जगत से पदार्थों/सूचनाओं को एकत्र करना। इसमें उन प्रजातियों की सूची बनाना, जिनका अस्तित्व खतरे में है एवं उनको सुरक्षित करने से सम्बन्धित प्रयासों की सूचना सूचीबद्ध करना।

<u>पोस्टर–</u>

- नदी–प्रदूषण।
- वनों का क्षरण एवं पारिस्थितिकीय असंतुलन।

नोट– कोई समान गतिविधि भी चुनी जा सकती है।

<u>प्रोजेक्ट कार्य</u> –

- शिक्षक अपने विवेकानुसार पाठ्यक्रम से सबंधित कोई 3 प्रोजेक्ट प्रत्येक 5–5 अंक छात्र/छात्राओं को वितरित कर सकते हैं।
- अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यह आवश्यक होगा कि प्रधानाचार्य/अध्यापक द्वारा विभिन्न स्थानीय सरकारी संस्थाएँ और संगठन जैसे आपदा प्रबंधन संस्थाएँ, सहायक, पुनर्वास और आपदा प्रबन्धन विभागों द्वारा (राज्यों के) जिलाधिकारी कार्यालय/उप आयुक्तों, अग्निशमन सेवा, पुलिस, नागरिक सुरक्षा आदि के द्वारा सहायता लिया जाना आवश्यक होगा।

प्रोजेक्ट कार्य हेतु अंक वितरण :

1.	विषयवस्तु की मौलिकता एवं शुद्धता	–	1 अंक
2.	प्रस्तुतीकरण तथा रचनात्मकता	–	1 अंक
3.	प्रोजेक्ट पूरा करने की प्रक्रिया		
	– पहल करना, सहयोगिता, सहभागिता तथा समयबद्धता	–	1 अंक
4.	विषयवस्तु आत्मसात करने हेतु मौखिक अथवा लिखित परीक्षा	–	2 अंक

05–05 अंकों के तीन त्रैमासिक टेस्ट = 15 अंक

3 प्रोजेक्ट प्रत्येक 05 अंक के = 15 अंक

योग– 30 अंक

कक्षा–9

(गणित)

समय– 3घंटा

इसमें 70 अंक की लिखित परीक्षा एवं 30 अंक का प्रोजेक्ट कार्य होगा।

इकाई	इकाई का नाम	अंक
1	संख्या पद्धति	07
2	बीजगणित	20
3	निर्देशांक ज्यामिति	05
4	ज्यामिति	20
5	मेन्सुरेशन	10
6	सांख्यिकी तथा प्रायिकता	08
	योग. .	**70**

इकाई–1 : संख्या पद्धति **07 अंक**

1. वास्तविक संख्याएँ प्राकृतिक संख्याएँ, पूर्णांकों, परिमेय संख्याओं का संख्या रेखा पर निरूपण की समीक्षा। क्रमिक वृद्धि द्वारा सांत/असांत आवर्ती दशमलव का संख्या रेखा पर निरूपण। आवर्ती/सांत दशमलव के रूप में परिमेय संख्याएँ। वास्तविक संख्याओं पर संक्रियाएँ।

2. अनावर्ती/असांत दशमलव के उदाहरण। अपरिमेय संख्याओ जैसे का अस्तित्व $\sqrt{2}, \sqrt{3}$ का अस्तित्व और उनका संख्या रेखा पर निरूपण। प्रत्येक वास्तविक संख्या का संख्या रेखा पर एक विशिष्ट बिन्दु के रूप में निरूपण की व्याख्या करना और विपरीत भी सिद्ध करना उदाहरण संख्या रेखा के प्रत्येक बिन्दु का एक विशिष्ट वास्तविक संख्या में निरूपण।

3. वास्तविक संख्या के n^{th} root की परिभाषा।

4. दिये गये वास्तविक संख्या x के लिए $\sqrt{x}$ का अस्तित्व और ज्यामितीय व्याख्या के साथ इसका संख्या रेखा पर निरूपण।

5. $\frac{1}{a+b\sqrt{x}}$ तथा $\frac{1}{\sqrt{x}+\sqrt{y}}$ तरह के वास्तविक संख्याओं का परिमेयीकरण (संक्षिप्त अर्थों में) जहाँ x और y प्राकृतिक संख्याएँ हैं और a और b पूर्णांक है।

6. पूर्ण घात वाले घातांकों के नियम का पुनः स्मरण (पुनरावलोकन) करना। धन वास्तविक आधार वाले परिमेय घातांक (विशेष स्थितियों में ही, सामान्य नियमों की जानकारी रखना)

इकाई–2 : बीजगणित **20 अंक**

1. बहुपद–एक चर वाले बहुपदों की परिभाषा उदाहरण तथा प्रतिउदाहरण के साथ। बहुपद के गुणांक, बहुपद के पद और शून्य बहुपद। एकपदीय, द्विपदीय तथा त्रिपदीय। गुणनखण्ड और गुणक। बहुपद के गुणक। शेषफल प्रमेय का कथन उदाहरण सहित। गुणखण्डन प्रमेय का कथन और सत्यापन। ax^2+bx+c, $a\neq0$ का गुणनखण्ड जहाँ a, b और c वास्तविक संख्याएँ हैं और गुणनखण्ड प्रमेय द्वारा त्रिघात बहुपद का गुणनखण्ड।

बीजगणितीय व्यंजक और सर्वसमिकाओं का पुनः स्मरण। सर्वसमिकाओं का सत्यापन–

$(x+y+z)^2 = x^2+y^2+z^2 + 2xy + 2yz + 2zx$

$(x \pm y)^3 = x^3 \pm y^3 \pm 3\times y\,(x \pm y)$

$(x \pm y)^3 = (x \pm y)\,(x^2 \mp x\,y + y^2)$

$x^3 + y^3 + z^3 - 3xyz = (x+y+z)\,(x^2+y^2+z^2-xy-yz-zx)$

और बहुपद के गुणनखण्ड में इनका उपयोग।

2. **दो चर राशियों में रैखिक समीकरण –**

एक चर राशि में रैखिक समीकरण, दो चरों में रैखिक समीकरण की जानकारी। $ax + by + c = 0$ प्रकार के रैखिक समीकरण पर विशेष ध्यान। सिद्ध करना कि दो चर वाले रैखिक समीकरण के अनन्ततः अनेक हल होते हैं और उनके वास्तविक संख्याओं के क्रमिक युग्म में लिखे जाने की परख करना, उनका निरूपण तथा रेखा पर उनका अंकन। दो चर राशियों में रैखिक समीकरण का ग्राफ खींचना। वास्तविक जीवन से संबंधित उदाहरण तथा समस्या प्रश्न। अनुपात तथा समानुपात से संबंधित प्रश्न तथा इनका बीजगणितीय तथा ग्राफीकल हल।

इकाई–3 : निर्देशांक ज्यामिति – **05 अंक**

कार्तीय तल, किसी बिन्दु के निर्देशांक, कार्तीय तल से सम्बन्धित नाम तथा पारिभाषिक शब्द (ज्मतउ), संकेतन, तल पर बिन्दुओं को दर्शाना।

इकाई–4 : **20 अंक**

(1) **यूक्लिड की ज्यामिति का परिचय** –

भारत में ज्यामिति तथा यूक्लिड की ज्यामिति। इतिहास, यूक्लिड की परिभाषाएँ, अभिग्रहीत और अभिधारणाएँ। यूक्लिड के पाँच अभिधारणाएँ। पाँचवीं अभिधारणा का समान संस्करण। अभिधारणा और प्रमेय के बीच सम्बन्ध, उदाहरण

(अभिधारणा) 1. दिए हुए दो भिन्न बिन्दुओं से होकर एक अद्वितीय रेखा खींची जा सकती है।

(प्रमेय) 2. (सिद्ध करना) दो भिन्न रेखाओं में एक से अधिक बिन्दु उभयनिष्ठ नहीं हो सकते।

2. **रेखा और कोण–**

(1) यदि एक किरण एक रेखा पर खड़ी हो, तो इस प्रकार बने दोनों आसन्न कोणों का योग 180^0 होता है और विपरीत भी सत्य हो।

(2) यदि दो रेखाएँ परस्पर प्रतिच्छेद करती हैं, तो शीर्षाभिमुख कोण बराबर होते हैं। (सिद्ध करना है)

(3) जब दो समान्तर रेखाओं को एक तिर्यक रेखा काटती है तो संगत कोणों, एकान्तर कोणों तथा आन्तरिक कोणों पर आधारित परिणाम सिद्ध करना।

(4) वे रेखाएँ जो एक ही रेखा के समान्तर हों, परस्पर समान्तर होती हैं।

(5) एक त्रिभुज के तीनों अन्तःकोणों का योग 180^0 होता है।

(6) यदि एक त्रिभुज की एक भुजा बढ़ाई जाए, तो इस प्रकार बना बहिष्कोण दोनों अंतःअभिमुख (विपरीत) कोणों के योग के बराबर होता है।

3. <u>त्रिभुज</u>–

(1) दो त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं यदि एक त्रिभुज की दो भुजाएँ और उनके बीच का कोण, दूसरे त्रिभुज की दो भुजाएँ और उनके बीच के कोण के बराबर हों। (SAS सर्वांगसमता)

(2) दो त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं, यदि एक त्रिभुज के दो कोण और उनकी अन्तर्गत भुजा दूसरे त्रिभुज के दो कोणों और उनकी अन्तर्गत भुजा के बराबर हों। (ASA सर्वांगसमता)

(3) यदि एक त्रिभुज की तीनों भुजाएँ एक अन्य त्रिभुज की तीनों भुजाओं के बराबर हों, तो दोनों त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं। (SSS सर्वांगसमता)

(4) यदि दो समकोण त्रिभुजों में, एक त्रिभुज का कर्ण और एक भुजा क्रमशः दूसरे त्रिभुज के कर्ण और एक भुजा के बराबर हों, तो दोनों त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं। (RHS सर्वांगसमता)

(5) किसी त्रिभुज की बराबर भुजाओं के सम्मुख कोण बराबर होते हैं।

(6) किसी त्रिभुज में समान कोणों के सामने की भुजाएँ बराबर होती हैं।

(7) त्रिभुजों में असमता तथा त्रिभुज की भुजाओं और कोण के बीच असमता सम्बन्ध का अध्ययन।

4. <u>चतुर्भुज</u>–

(1) किसी समान्तर चतुर्भुज का एक विकर्ण उसे दो सर्वांगसम त्रिभुजों में विभाजित करता है।

(2) एक समान्तर चतुर्भुज में सम्मुख भुजाएँ बराबर होती हैं और विपरीत भी सत्य है।

(3) एक समान्तर चतुर्भुज में सम्मुख कोण बराबर होते हैं और विपरीत भी सत्य है।

(4) यदि एक चतुर्भुज की सम्मुख भुजाओं का प्रत्येक युग्म समान्तर हो, तो वह एक समान्तर चतुर्भुज होता है।

(5) समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण एक दूसरे को (परस्पर) समद्विभाजित करते हैं और विपरीत भी सत्य है।

(6) एक त्रिभुज की किन्हीं दो भुजाओं के मध्य बिन्दुओं को मिलाने वाला रेखाखण्ड तीसरी भुजा के समान्तर होता है तथा विपरीत भी सत्य है।

5. <u>क्षेत्रफल</u>–

क्षेत्रफल की अवधारणा तथा आयत के क्षेत्रफल का पुनः स्मरण

(1) एक ही आधार और एक ही समान्तर रेखाओं के बीच स्थित समान्तर चतुर्भुज क्षेत्रफल में बराबर होते हैं।

(2) एक ही आधार (या बराबर आधारों) और एक ही समान्तर रेखाओं के बीच स्थित त्रिभुज का क्षेत्रफल बराबर
होता है।

6. <u>वृत्त</u>–

वृत्त की परिभाषा, निम्न अवधारणा उदाहरण सहित–त्रिज्या, परिधि, व्यास, जीवा, चाप, वृत्तखण्ड, त्रिज्यखंड, अन्तरित कोण।

(1) वृत्त की बराबर जीवाएँ केन्द्र पर बराबर कोण अंतरित करती है तथा विपरीत भी सत्य है।

(2) एक वृत्त के केन्द्र से एक जीवा पर डाला गया लम्ब जीवा को समद्विभाजित करता है। वृत्त के केन्द्र से जीवा को समद्विभाजित करने के लिए खींची गयी रेखा जीवा पर लम्ब होती है।

(3) तीन असंरेख बिन्दुओं से एक और केवल एक वृत्त खींचा जा सकता है।

(4) एक वृत्त की (या सर्वांगसम वृत्तों की) बराबर जीवाएँ केन्द्र से (या केन्द्रों से) समान दूरी पर होती है। विपरीत भी सत्य है।

(5) एक चाप द्वारा केन्द्र पर अंतरित कोण वृत्त के शेष भाग के किसी बिन्दु पर अंतरित कोण का दुगुना होता है।

(6) एक ही वृत्तखण्ड के कोण बराबर होते हैं।

(7) यदि दो बिन्दुओं को मिलाने वाला रेखाखण्ड, उसको अंतर्विष्ट करने वाली रेखा के एक ही ओर स्थित दो अन्य बिन्दुओं पर समान कोण अंतरित करें, तो चारों बिन्दु एक वृत्त पर स्थित होते हैं। (अर्थात वे चक्रीय होते हैं)

(8) चक्रीय चतुर्भुज के सम्मुख कोणों के प्रत्येक युग्म का योग 180^0 होता है। विपरीत भी सत्य है।

रचनाएँ–

(1) रेखाखण्ड के लम्ब समद्विभाजक, कोण 60^0, 90^0, 45^0 इत्यादि के समद्विभाजक तथा समबाहु त्रिभुज की रचना करना।

(2) दिये हुए आधार, एक आधार कोण तथा अन्य दो भुजाओं के योग/अन्तर से त्रिभुज की रचना करना।

(3) एक त्रिभुज की रचना कीजिए जिसका परिमाप तथा दोनों आधार कोण दिये हों।

इकाई–5 : मेन्सुरेशन **10 अंक**

1. **क्षेत्रफल –** हीरोन के सूत्र का प्रयोग करके त्रिभुज का क्षेत्रफल निकालना (बिना सिद्ध किए) और इसका अनुपयोग चतुर्भुज का क्षेत्रफल निकालने के लिए।

2. **पृष्ठीय क्षेत्रफल तथा आयतन –** घन, घनाभ, गोला (अर्द्धगोला सहित) और लम्ब वृत्तीय बेलन/शंकु का पृष्ठीय क्षेत्रफल तथा आयतन।

इकाई–6 : सांख्यिकी तथा प्रायिकता **08 अंक**

1. **सांख्यिकी –** सांख्यिकी का परिचय, आंकड़ों का संग्रह, आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण–सारणीकृत, अवर्गीकृत/वर्गीकृत, बारम्बारता ग्राफ, बारम्बारता बहुभुज, माध्य, माध्यिका तथा अवर्गीकृत आंकड़ों का बहुलक।

2. **प्रायिकता –** इतिहास, प्रायिकता के परिप्रेक्ष्य में परीक्षण का दुहराव तथा प्रेक्षित बारम्बारता। आनुभाविक प्रायिकता पर ध्यान केन्द्रित करना। (संकल्पना को प्रेरित करने के लिए समूह तथा व्यक्तिगत क्रिया–कलापों पर ज्यादा समय का समर्पण। परीक्षणों को वास्तविक जीवन से संबंधित तथा सांख्यिकी के अन्तर्गत दिए गए अध्याय के उदाहरणों से लिया जाय)

प्रोजेक्ट कार्य

कक्षा–9

अंक–30

नोट– निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट प्रत्येक छात्र से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट अपने स्तर से भी दे सकते हैं।

(1) विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की वास्तुकला एवं निर्माण में भूमिका का अध्ययन करना।

(2) मध्यकाल के किसी एक भारतीय गणितज्ञ (आर्यभट्ट, श्रीधराचार्य, महावीराचार्य आदि) के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालना।

(3) π (पाई) की खोज।

(4) अपने घर के आय–व्यय का बजट बनाना।

(5) बीजगणितीय सर्वसमिकाओं जैसे $(a + b)^2 = a^2 + 2ab + b^2$, $(a - b)^2 = a^2 - 2ab + b^2$ का क्रियात्मक निरूपण करना।

(6) बैंक में खोले जाने वाले विभिन्न प्रकार के खातों एवं उनकी ब्याज दरों का अध्ययन करना।

(7) समतल या गत्ता काटकर विभिन्न ठोस आकृतियाँ बनाना एवं उनकी विशेषतायें लिखना।

(8) परिमेय संख्याओं का संख्या रेखा पर निरूपण।

(9) अपनी कक्षा के छात्रों की ऊँचाई और भार का सर्वे कीजिए तथा भार और ऊँचाई में सम्बन्ध बताइए।

(10) समाचार पत्र के माध्यम से किन्हीं तीन गल्ला मण्डियों के अनाज भाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

कक्षा–10

हिन्दी

पद्य

1–श्री श्याम नारायण पाण्डेय की रचना– ''हल्दीघाटी'' को सम्मिलित किया गयाः–

हल्दीघाटी

मेवाड़–केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़–दौड़ करता था रण,
वह मान–रक्त का प्यासा था।।
चढ़कर चेतक पर घूम–घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ–साथ
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट–काट,
करता था सफल जवानी को।।

सेना–नायक राणा के भी,
रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे
दूने तिगुने उत्साह भरे।।

क्षण मार दिया कर कोड़े से,
रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा–दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।
क्षण भीषण हलचल मचा मचा,
राणा–कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह
रण चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।

वह हाथी दल पर टूट पड़ा,